नई सदी की प्रस्तुति

अकबर-बीरबल

की नोक-झोक

₹25

विषय सूची

1. लेने के देने पड़े 4
2. झूठ नहीं छिपता.....5
3. शर्मसार दरबारी.....6
4. भगवान को भक्त प्यारा.....7
5. दुकानदार को मिला सबक.....7
6. आराम से जो मरे वो सुखी 8
7. सौ के बदले डेढ़ सौ अशर्फियां.....8
8. सीढ़ियां कितनी हैं.....9
9. हाजिर जवाब बीरबल 10
10. दूध भाई.....11
11. शराब का शौक.....12
12. दो और पत होते हैं.....14
13. बीरबल की नेक सलाह 14
14. कुत्ता और दामाद 15
15. शर्मसार हुई बेगम.....15
16. हम जैसा करते हैं वैसा पाते हैं.....16
17. साधु का तोता.....16
18. नाई गया स्वर्ग में.....17
19. बीरबल की पारखी नजर.....19
20. दीपक तले अंधेरा.....20
21. श्रेष्ठ हथियार वही, जो मौके पर काम आए.21
22. सूरत से बड़ी सीरत 22
23. बुद्धिमानों के बुद्धिमान.....22
24. अक्ल का घड़ा.....23
25. मुर्खों की गिनती.....24
26. न कम न अधिक.....25
27. दुष्ट के साथ दुष्टता.....25
28. एक कागज ऊंची चारपाई.....26
29. बुजुर्गों से मिला ज्ञान.....27
30. आपसे बड़ा नहीं हो सकता.....27
31. बीरबल की खिचड़ी 28
32. दो माह का एक माह 30
33. नौकर आपका हूं, बैंगन का नहीं.....30
34. अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा 30
35. नदी पति के घर जा रही है 31
36. बादशाह के अनमोल सवाल.....31
37. नीचे की मंजिल.....32
38. सबसे ज्यादा सफेद कौन?.....32
39. कितने दिन जीना है.....33
40. बेरहम मां 34
41. विश्वासघाती काजी.....35
42. घर कैसे लुटा 38
43. चालाक बनिया.....38
44. शातिर दिमाग मुंशी.....39
45. अपना वायदा भूल गया होगा 39
46. पूनम और दूज का चांद 40
47. कुछ भी नहीं बचा.....41
48. सच्चाई के मसीहा बीरबल 41
49. किसकी पत्नी.....42
50. कौन जीतेगा.....43
51. सबसे बड़ा बच्चा.....44
52. तीसरी नजर का कमाल 44
53. बादशाह हंसें तो हंसें रोएं तो रोएं 45
54. पढ़ा-लिखा गधा 45
55. संसार की सबसे बड़ी चीज.....46
56. आयुवर्धक वृक्ष 47
57. दूध की जगह पानी.....48
58. तीन चीजें 48
59. पगड़ी में पंख.....49
60. मित्रता समाप्त 50

मूल्य : 25/-

साज-सज्जा : शौर्ययश ग्राफिक्स (9999598662)

प्रकाशक : नई सदी प्रकाशन प्रा.लि., ए-7, कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स, डॉ. मुखर्जी नगर (निकट बत्रा सिनेमा) दिल्ली-110009

फोन : 011-27658461-62 E-mail : naisadiprakashan@gmail.com

मुद्रक : नई सदी प्रकाशन प्रा.लि. (प्रिंटिंग डिविजन), प्लॉट न. : सी-3, सेक्टर-ए 5&6, ट्रोनिका सिटी लोनी, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

लेने के देने पड़े

एक गरीब आदमी ने नींद में सपना देखा कि उसने अपने दोस्त हरिराम से सौ रुपये उधार लिए हैं। सुबह जब वह बिस्तर से उठा तो उसने स्वप्न के बारे में अपने दोस्तों को बताया। इस तरह यह बात चारों तरफ फैल गई कि घनश्याम ने हरिराम से सौ रुपये उधार लिये हैं।

हरिराम को जब यह बात मालूम हुई तो वह घनश्याम के पास पहुंचकर बोला, "मैंने तुम्हें जो सौ रुपये दिए थे, मुझे वापस कर दो।" घनश्याम आश्चर्य से बोला, "यह तुम क्या कह रहे हो? वह तो स्वप्न की बात थी।" हरिराम बोला, "देखो, इंकार न करो। गवाही सैकड़ों लोग दे सकते हैं। तुमने स्वयं सबसे यह बात कही है। रुपये लेना तुमने खुद स्वीकार किया है।"

"दोस्त, वह तो सपने की बात थी। सपने की बात सच

थोड़े ही होती है?''
घनश्याम ने कहा।

हरिराम भौंहें चढ़ाकर बोला, ''मैं कुछ नहीं जानता, जब तुमने रुपये लेना स्वीकार कर लिया है तो तुम्हें रुपये देने ही पड़ेंगे। अगर तुम रुपये नहीं दोगे तो मैं यह मामला बादशाह अकबर के दरबार में ले जाऊंगा।''

घनश्याम इतना गरीब था कि उसके पास तो कभी सौ रुपये होते ही नहीं थे, वह सौ रुपये देता भी तो कैसे देता? वह बहुत ही परेशान हो गया और डर गया। आखिर मामला बादशाह अकबर के दरबार में पहुंचा। बादशाह ने यह मामला बीरबल को सौंपते हुए कहा, ''बीरबल, अपनी चतुराई से सही न्याय करो।''

बीरबल ने दोनों पक्षों की पूरी बातें सुनीं। गवाहों की बातें सुनीं। फिर सौ रुपये गिनकर एक थैली में रखे और हरिराम के सामने उस थैली को सरकाते हुए एक आईने के सामने इस तरह से रखी कि थैली का प्रतिबिंब आईने में साफ दिखने लगा। आईने की ओर इशारा करते हुए बीरबल ने ऊंचे स्वर में कहा, ''हरीराम, तुम आईने से अपने रुपये ले सकते हो।''

हरिराम आश्चर्य से बोला, ''हुजूर, आईने में दिखाई देने वाले रुपये को मैं कैसे ले सकता हूं?''

''बिल्कुल सही कहा।'' बीरबल बादशाह की ओर देखते हुए बोले, ''सपना भी तो एक प्रतिबिंब की तरह ही होता है। फिर सपने में उधार लिया गया रुपया कैसे वापस किया जा सकता है? हरीराम, तुमने झूठा आरोप लगाकर दरबार का समय बर्बाद किया है। अतः तुम पर 20 रुपये का जुर्माना किया जाता है ताकि तुम भविष्य में कभी ऐसी गलती न करो।'

बीरबल के इस न्याय से बादशाह बहुत प्रसन्न हुए। लालची हरिराम को लेने के देने पड़ गए।

झूठ नहीं छिपता

बादशाह अकबर अभी आकर दरबार में बैठे ही थे कि तभी दरबार में एक कसाई और एक तेली आपस में बहस करते हुए आ गए।

बादशाह ने बीरबल से कहा, ''बीरबल, देखो यह क्यों बहस कर रहे हैं?''

''जी हुजूर।'' कहते हुए बीरबल उठ खड़े हुए और पूछा, ''तुम दोनों में से शिकायत लेकर कौन आया है?''

तेली थोड़ा आगे बढ़कर बोला, ''शिकायत लेकर मैं आया हूं, हूजूर।''

''हां, तो झगड़े का कारण क्या है?'' बीरबल ने पूछा।

तेली रोनी-सी सूरत बनाकर बोला, ''हुजूर, मैं अपनी दुकान पर बैठा बहीखाता देख रहा था, उसी समय कसाई ने आकर मुझसे तेल मांगा। मैंने इसे तेल दे दिया और चला गया। फिर मैं बहीखाता देखने लगा। कुछ समय बाद जब मेरी नजर सामने गई तो पैसों की थैली गायब थी। मुझे इस कसाई पर संदेह हुआ और मैं दौड़ा-दौड़ा इसके पास गया तो मैंने अपनी थैली इसके हाथ में देखी। मैंने इससे अपनी थैली मांगी तो इसने थैली देने से मना करते हुए कहा कि यह थैली इसकी है। मैं सच बोल रहा हूं, हूजूर। अब आप ही इंसाफ करें।''

बीरबल ने कसाई से पूछा, ''तुम्हारा क्या कहना है?''

कसाई डरी-सहमी आवाज में बोला, ''हुजूर, मैं जो कुछ भी कहूंगा सच कहूंगा, सच के सिवा कुछ नहीं कहूंगा- हुजूर, मैं अपनी दुकान पर बैठा पैसे गिन रहा था, तभी यह तेली रोज की तरह तेल बेचने के लिए आया। इसकी दुकान मेरी दुकान से दो-तीन दुकानों की दूरी पर है। पैसों की थैली मैंने पास में ही रखी थी। इसके जाने के बाद जब मेरी थैली नहीं दिखी तो मैंने दौड़कर इसे पकड़ा और इसके हाथ से अपनी थैली छीन ली। सच्चाई यही है, हुजूर। इस बात का गवाह खुदा है। अब सही या गलत का इंसाफ आपको करना है।''

बीरबल ने पैसों की थैली अपने पास रख ली और उनसे कहा, ''फैसला कल होगा। तुम दोनों घर जाओ।''

उन दोनों के चले जाने के बाद बीरबल ने थैली के पैसे धुलवाए तो उनमें तेल थोड़ा-सा भी नजर नहीं आया बल्कि मांस की दुर्गंध आई, जिससे उन्हें यकीन हो गया कि यह थैली और पैसे दोनों ही कसाई के हैं। दूसरे दिन दरबार लगा। दरबार में कसाई और तेली हाजिर हुए।

बीरबल ने उन्हें अपना फैसला सुनाया तो तेली चीखने चिल्लाने लगा।

बीरबल ने सिपाही से कहा, ''तेली की पीठ पर 100 कोड़े बरसाए जाएं।''

बीरबल ने जैसे ही उसे कोड़े लगाने का हुक्म दिया उसने तुरंत अपना अपराध स्वीकार कर लिया। पैसों की थैली कसाई को दे दी गई। तेली को दंडित करके छोड़ दिया गया।

बादशाह ने कहा, ''बहुत खूब बीरबल, हम तुम्हारे इस न्याय से बहुत खुश हैं।'' झूठ कभी छिपता नहीं है, वह एक दिन पकड़ा ही जाता है।

शर्मसार दरबारी

बादशाह अकबर दरबार में बैठे थे। दरबारी बीरबल से बहुत ही जलते थे और यह नहीं चाहते थे कि बादशाह से बीरबल के संबंध अच्छे रहें। अतः दरबारियों ने बादशाह से कहा, ''हुजूर, आप हर बात बीरबल से ही पूछा करते हैं। हमें कोई महत्व नहीं देते हैं। इससे हमारे स्वाभिमान को ठेस पहुंचती है।''

शहंशाह अकबर बोले, ''आप लोगों की शिकायत गलत है। बीरबल कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। वह बहुत ही चतुर और समझदार हैं। कोई भी उनकी बुद्धिमत्ता के आगे ठहर नहीं सकता। यही कारण है कि हम कोई भी काम बीरबल से पूछकर करते हैं।'' शहंशाह अकबर की यह बात दरबारियों को पसंद नहीं आई। वे बीरबल से और भी ज्यादा नाराज हो गए।

बादशाह ने दरबारियों को शांत बैठे देखा तब उन्होंने कहा, ''अगर तुम सबको ऐसा लगता है कि तुम सब बीरबल से अधिक चतुर और बुद्धिमान हो तो आज तुम सबकी बुद्धिमानी की परीक्षा ली जाएगी। तुममें से जो भी इस परीक्षा में पास होगा, उसे बीरबल का स्थान मिल जाएगा।'' इतना बोलकर शहंशाह ने दो हाथ लंबी दुलाई मंगवाई।

अब बादशाह ने दरबारियों की तरफ देखते हुए कहा, ''देखो, मैं लेट जाता हूं और तुम सब एक-एक करके मेरा शरीर इस दुलाई से ढकने का प्रयास करो। मेरे शरीर का कोई भी अंग खुला नहीं रहना चाहिए। जो भी दरबारी मेरा पूरा शरीर इस दुलाई से ढक देगा उसे ही बीरबल की जगह पर रखा जाएगा।'' दरबारियों को मन-ही-मन हंसी आ गई कि भला यह भी कोई दिमाग वाला काम है। यह काम तो कोई भी कर देगा।

बादशाह भरे दरबार में लेट गए। एक-एक करके सभी दरबारी बादशाह को दुलाई ओढ़ाने आए लेकिन कोई भी दरबारी उनके पूरे शरीर को दुलाई से ढक न सका।

अब बादशाह उठ खड़े हुए और बोले, ''देखी आपने अपनी बुद्धिमानी, क्या अपनी इसी बुद्धिमानी पर आप सबको इतना अभिमान था?अगर बीरबल यहां होते तो अवश्य ही इसी दुलाई से मेरा शरीर ढक देते। जब आपमें से कोई एक भी इतना छोटा-सा काम नहीं कर सकता तो दिमाग वाला काम क्या करोगे?'' यह कहकर बादशाह ने बीरबल को दरबार में बुलाया और बीरबल के हाथ में दुलाई देकर सारी बात बता दी।

बादशाह पहले की तरह ही दरबार में लेट गए। बीरबल ने दुलाई को गौर से देखा, वह बहुत ही छोटी थी। बीरबल ने कहा, ''जहांपनाह, आप अपने पैर सिकोड़ लें। बादशह के पांव सिकोड़ने पर बीरबल ने दुलाई से उनका सारा शरीर ढक दिया, फिर बीरबल ने बादशाह से कहा, ''उतने पांव फैलाइए, जितनी लंबी चादर हो।''

बादशाह बीरबल के इस विचार से गद्‌गद हो गए और दरबारियों से कहा, ''बीरबल की चतुराई तुम सबने देख ली न? अब तो किसी को कोई शिकायत नहीं होगी?'' शर्मसार दरबारी शहंशाह से माफी मांगकर चुप हो गए।

भगवान को भक्त प्यारा

शहंशाह अकबर ने एक बार बीरबल से सवाल करते हुए कहा, ''बीरबल, हमने सुना है कि हाथी की पुकार सुनकर श्रीकृष्ण उसकी सहायता करने के लिए नंगे पांव दौड़े चले आए थे। न उनके साथ नौकर थे, न कोई सिपाही था, न कोई घोड़ागाड़ी। बीरबल, हमारी समझ में इसका कारण नहीं आता। क्या उनके पास नौकर नहीं थे या नौकरों का अभाव था?''

बीरबल थोड़ा मुस्कराए, फिर बोले, ''जहांपनाह, मैं इसका जवाब देने के लिए आपसे कुछ दिनों का समय चाहता हूं।''

कुछ दिनों के बाद बीरबल एक शाही नौकर से मिले, जो शहंशाह के पोते की देखभाल करता था। उस शाही नौकर से इजाजत लेकर बीरबल बादशाह के पोते को एक शिल्पकार के पास ले गए और उससे कहा कि इस बच्चे की सूरत से मिलता-जुलता मोम का एक पुतला तैयार कर दो। पुतला जब तैयार हो गया तो बीरबल ने पुतले को शाही वस्त्राभूषणों से सजा दिया, फिर उन्होंने मोम के पुतले को उसी नौकर को देते हुए कहा, ''इस पुतले को रोज की तरह बादशाह के सामने ले जाना और पास के तालाब में फिसल जाने का नाटक करते हुए गिर पड़ना। लेकिन इस बात का अवश्य ध्यान रखना कि पुतला तालाब में गिरे और तुम तालाब के किनारे पर ही गिरना। अगर तुम इस नाटक को करने में सफल रहे तो तुम्हें ढेरों इनाम मिलेंगे।''

शाही नौकर ने इनाम के लालच में बीरबल ने जैसा कहा था, वैसा ही किया। वह मोम के पुतले को लेकर तालाब के पास आया और मोम का पुतला पानी में गिराकर वह स्वयं भी तालाब के किनारे पर गिर पड़ा।

बादशाह अकबर दूर से ही यह सब देखकर घबरा गए और जिस हाल में थे उसी हाल में दौड़ते हुए आए और तालाब में कूदकर पुतले को लेकर तालाब के बाहर आ गए। हाथ में मोम का पुतला देखकर बादशाह अकबर समझ गए यह बीरबल का ही किया धरा है।

बीरबल ने झट से कहा, ''जहांपनाह, इतने नौकर-चाकर हैं, घोड़ागाड़ी हैं, सिपाहियों की इतनी बड़ी फौज है, फिर भी आप स्वयं अकेले ही तालाब में क्या कूद पड़े?' शहंशाह अब कहते भी क्या, वह तो आश्चर्य से भरे मौन खड़े रह गए।

बीरबल हंसने लगे, ''हुजूर, अब तो कुछ कहने की जरूरत ही नहीं है। जिस तरह से आपको अपना पोता प्यारा है, उसी तरह से भगवान श्रीकृष्ण को उनके भक्त प्यारे हैं। यही कारण है कि वह गजराज की एक पुकार पर पैदल ही दौड़े चले आए थे।''

बादशाह अकबर बीरबल के जवाब से संतुष्ट थे और उन्होंने बीरबल को ढेरों इनाम से सुशोभित किया।

दुकानदार को मिला सबक

एक दुकानदार बहुत ही कंजूस और जरूरत से अधिक बेईमान व लालची था। वह बर्तनों को बेचता और खरीदता था। शहर के अधिकांश लोग उसके व्यवहार से परेशान व दुखी थे। अतः सबने मिलकर उस दुकानदार की शिकायत बीरबल से की, ''हुजूर, वह दुकानदार बहुत ही लालची, धूर्त और बेईमान है। मेहरबानी करके आप उस दुकानदार को सबक सिखाएं।''

बीरबल सबकी शिकायत पर उस दुकानदार से जाकर मिले और उसकी दुकान से तीन पतीले खरीदकर ले आए। कुछ समय बाद बीरबल एक छोटी-सी पतीली लेकर दुकानदार से मिले और कहने लगे, ''आपके बड़े पतीले ने इसे पैदा किया है। आप इस पतीली

को रख लें।''

दुकानदार बहुत ही प्रसन्न हुआ और पतीली लेकर चुपचाप रख ली। यह भी नहीं सोचा कि भला पतीला पतीली को कैसे पैदा कर सकता है?

पंद्रह-बीस दिन के बाद बीरबल एक बड़ा पतीला लेकर दुकानदार से मिले और बोले, ''मुझे आपके पतीले ठीक नहीं लगे, आप मुझे इनका मूल्य लौटा दें।''

यह सुनकर दुकानदार बौखला गया और ऊंची आवाज में बोला, ''आप तो केवल एक पतीला लेकर आए हैं, मैंने तो आपको तीन बड़े पतीले दिए थे।''

बीरबल दुखी स्वर में बोले, ''हां, मुझे याद है, लेकिन क्या बताऊं, तीन में से दो की मौत हो गई है।''

दुकानदार यह सुनते ही चिढ़ गया और भौंहें चढ़ाते हुए बोला, ''क्या बात करते हैं जनाब, पूरे नगर में क्या एक मैं ही आपको मूर्ख मिला हूं? कहीं पतीले भी मरते हैं?''

''पतीले जब बच्चे पैदा कर सकते हैं तब पतीले मर क्यों नहीं सकते हैं?'' बीरबल ने अपने जवाब से दुकानदार का मुंह बंद कर दिया।

दुकानदार ने न केवल बीरबल को पतीलों के पैसे लौटाए बल्कि हाथ जोड़कर अपने गुनाहों के लिए उनसे माफी भी मांगनी पड़ी। ●

आराम से जो मरे वो सुखी

बादशाह अकबर एक दिन बीरबल के साथ सुबह की सैर पर निकले। एक नंगे आदमी को देखकर उन्हें गुस्सा आ गया। उन्होंने बीरबल से पूछा, ''बताओ बीरबल, सबसे अधिक सुखी इस दुनिया में कौन है? मैं तरह तरह की वेशभूषा में लोगों को जीवन बिताते तथा अनेक प्रकार के भगवानों की पूजा/इबादत आदि करते देख कर असमंजस में पड़ गया हूं। बीरबल, मुझे मालूम है, मेरे सवाल का जवाब केवल तुम ही दे सकते हो।''

बीरबल बोले, ''हुजूर, कोई आदमी कितना सुखी है या कितना दु:खी है, इसका पता तो उसके मरने के बाद ही चल पाता है।''

''बीरबल, तुम क्या कहना चाहते हो, हम समझे नहीं।'' शहंशाह अकबर ने कहा।

बीरबल बोले, ''जहांपनाह, आज जो आदमी सुखी है, वही कल को मुसीबत में पड़कर दुखी हो जाता है। फिर ऐसे में किसी जिंदा व्यक्ति को कैसे सुखी या दुखी कहा जा सकता है। यहां अनगिनत ऐसे आदमी हैं, जो दिखते तो सुखी हैं, पर उनका दिल दु:खों से भरा पड़ा है। फिर उन्हें सुखी कैसे कहा जा सकता है। हुजूर, मेरी राय में तो जो व्यक्ति सुखपूर्वक मरता है, वही सुखी होता है।'

बीरबल के इस जवाब को सुनकर शहंशाह बहुत प्रसन्न हुए और उनकी तारीफ करने लगे। ●

सौ के बदले डेढ़ सौ अशर्फियां

बादशाह अकबर दरबार में बैठे हुए दरबारियों से बातचीत कर रहे थे। इसी बीच दरबार में दो व्यक्तियों को हाजिर किया गया। बादशाह ने उन दोनों को गौर से देखा। पहला आदमी बोला, ''जहांपनाह, इस आदमी ने मुझसे सौ अशर्फियां कर्ज ली थीं, किंतु अब देने से मना कर रहा है।''

दूसरा आदमी अपनी सफाई में बोला, 'मेरे मालिक,' इस आदमी से मैंने कभी भी कोई लेन-देन नहीं किया। मैंने इससे कोई कर्ज नहीं लिया है। इसका आरोप निराधार और झूठा है।''

शहंशाह अकबर दोनों की बातें सुनकर दुविधा में पड़ गए और बीरबल से बोले, ''बीरबल, अब तुम ही सच-झूठ का फैसला करो।''

बीरबल पहले आदमी से बोले, ''यह बताओ, तुमने इसे अशर्फियां कहां पर दी थीं?''

''हुजूर, बबूल के पेड़ के नीचे।'' पहले आदमी ने जवाब में कहा।

''वह बबूल का पेड़ कहां पर है?'' बीरबल ने जानना चाहा।

''वह बबूल का पेड़ जंगल में है, हुजूर।'' पहला आदमी बोला।

बीरबल ने बड़ी चतुराई से कहा, ''ठीक है, तुम जाओ और उस पेड़ को दरबार में हाजिर करो।'' पहला आदमी बदहवास-सा जंगल की ओर दौड़ता चला गया।

काफी समय बीत जाने के बाद भी जब पहला आदमी लौटकर दरबार में नहीं आया तब बीरबल ने कहा, ''हुजूर, उस आदमी ने आने में बड़ी देर कर दी। दरबार का कीमती समय बर्बाद हो रहा है। जहांपनाह, आप अपना फैसला सुनाइए।'' बीरबल के यह कहते ही दूसरा आदमी अचानक ही बोल पड़ा, ''जहांपनाह, वह इतनी जल्दी लौटकर नहीं आ सकता है।''

''लेकिन तुम यह कैसे कह सकते हो?'' बीरबल ने झट से सवाल कर दिया, ''यह बात तुम इतने विश्वास के साथ कैसे कह सकते हो कि वह इतनी जल्दी नहीं आ सकता?''

''हुजूर, मुझे मालूम है,, बबूल का वह पेड़ यहां से छः कोस दूर है।'' दूसरे आदमी के इतना कहते ही बीरबल की आंखें चमक उठीं, ''जहांपनाह, यह आदमी ही अपराधी है। इसी ने अशर्फियां ली हैं, तभी तो इसे पता है कि बबूल का वह पेड़ यहां से छः कोस दूर है।''

शहंशाह अकबर ने बीरबल की बुद्धि और चतुराई की तारीफ करते हुए फैसला सुनाया, ''पहला आदमी सच्चा है और दूसरा आदमी झूठा है। दूसरा आदमी पहले को सौ के बदले डेढ़ सौ अशर्फियां देगा।'' दूसरे आदमी को बीरबल की चतुराई से सबक मिल गया था।

सीढ़ियां कितनी हैं

बादशाह अकबर और बीरबल महल के बाग में टहल रहे थे। शहंशाह मूड में थे। उन्होंने बीरबल से सवाल कर दिया, ''बीरबल, क्या तुम्हें मालूम है कि तुम्हारी पत्नी की कलाइयों में कितनी चूड़ियां हैं?तुम तो दिन में कई बार पत्नी का हाथ पकड़ते होंगे।''

बीरबल दुविधा में पड़ गए। उन्होंने तो कभी इस तरफ ध्यान ही नहीं दिया था। बीरबल कुछ देर तक चुप रहे, फिर बोले, ''हुजूर, मेरा हाथ तो पत्नी के हाथ को कभी कभार ही पकड़ता है। लेकिन हुजूर, क्या आप बता सकते हैं कि आपकी दाढ़ी में कितने बाल हैं?''

बादशाह बीरबल की बात को नजरअंदाज कर गए और बोले, ''बीरबल दाढ़ी के बाल की गिनती कर पाना नामुमकिन है किंतु हाथ की चूड़ियों को तो सरलता से गिना जा सकता है।''

बीरबल बोले, ''हुजूर, औरतों का क्या, वे तो अपनी कलाइयों में कम-ज्यादा चूड़ियां पहनती रहती हैं। औरत के हाथों में कितनी चूड़ियां हैं बिना गिने बता पाना मुश्किल है। आप तो महल में प्रतिदिन ही जाते हैं। ऊपरी मंजिल पर जाने के लिए आप सीढ़ियां तो चढ़ते ही होंगे। हुजूर, आप बता सकते हैं कि कितनी सीढ़ियां हैं?''

शहंशाह बोले, ''मैंने कभी सीढ़ियों की संख्या की तरफ ध्यान ही नहीं दिया।''

बीरबल हंसते हुए बोले, ''जहांपनाह, सीढ़ियों को तो घटाया-बढ़ाया भी नहीं जा सकता। वे वर्षों से एक ही संख्या में हैं, फिर भी वे कितनी हैं आपको मालूम नहीं तो भला मैं हर माह घटने-बढ़ने वाली चूड़ियों की संख्या कैसे बता सकता हूं? फिर भी मैं दोषी हूं तो बंदे की गर्दन हाजिर है, हुजूर।''

बीरबल की इस बुद्धिमत्ता के आगे बादशाह अकबर निरूत्तर रह गए।

हाजिर जवाब बीरबल

एक बूढ़ी स्त्री अपनी विधवा बहू के साथ बीरबल से मिली। उसका बेटा सेना में था और कुछ रोज पहले ही एक लड़ाई में शहीद हो गया था। बुढ़िया उनसे हाथ जोड़कर बोली, "सुना है कि शहंशाह अकबर आपकी बात मानते हैं। बेटे के शहीद हो जाने के बाद हम सास-बहू बेसहारा हो गई हैं। हमारी कुछ मदद करें।"

बीरबल ने बुढ़िया को ढाढ़स बंधाते हुए कहा, ''आप चिंता न करें। हमारे शहंशाह बड़े ही दयालु हैं। वे आपकी मदद जरूर ही करेंगे। मैं जैसा कहता हूं बस वैसा ही आप करती जाएं।'' बीरबल के मुख से इतनी बातें सुनकर बुढ़िया अपने घर को लौट गई। दूसरे दिन वह बुढ़िया अपनी बहू को लेकर दरबार में हाजिर हुई। उसने शहंशाह अकबर से विनती की और अपने शहीद बेटे की तलवार भी उनके सामने रख दी। फिर बोली, ''शहंशाहों के शहंशाह, मेरे बेटे ने युद्ध से कभी मुंह नहीं मोड़ा। यह वही तलवार है, जिससे उसने बहुत सारे युद्ध लड़े। इस तलवार को आप अपने शस्त्रागार में सम्मान के साथ रखें।''

बादशाह अकबर ने उस तलवार को ध्यान से देखा। वह तलवार बहुत पुरानी थी और उसमें जंग भी लगी थी। बादशाह ने मन-ही-मन सोचा, ''इस तलवार का क्या मोल।'' उन्होंने एक सैनिक को हुक्म दिया, ''यह तलवार इस स्त्री को दे दी जाए और सोने की पांच मोहरें भी।'' बीरबल को यह सुनकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वह शहंशाह से बोले, ''जहांपनाह, क्या मैं इस तलवार को देख सकता हूं।'' बादशाह के 'हां' कहते ही बीरबल ने तलवार उठा ली और उसे ध्यान से देखा, फिर चुपचाप खड़े हो गए। शहंशाह अकबर ने बीरबल को देखते हुए पूछा, ''बीरबल, इस तलवार में ऐसी क्या बात है कि तुमने इसे इतने गौर से देखा और चुपचाप खड़े हो गए?''

बीरबल बोले, ''जहांपनाह, मुझे पूरा विश्वास था कि यह तलवार सोने की बन जाएगी।''

बादशाह अकबर आश्चर्य से बोले, ''क्या कह रहे हो, जंग लगी तलवार भला सोने की कैसे बन सकती है?''

''बन सकती है, जहांपनाह।'' बीरबल ने कहा।

''जंग लगी लोहे की तलवार सोने की कैसे बन सकती है?अपनी बात को पूरा करो, बीरबल।'' जहांपनाह ने सवाल कर दिया।

बीरबल बड़े ही शांत भाव से बोले, ''जहांपनाह, पारस पत्थर का एक छोटा-सा टुकड़ा लोहे को सोना बना देता है। मैं तो यह सोच कर आश्चर्य में हूं कि आपके हाथों में आने के बाद भी यह तलवार लोहे की ही बनी रही।''

शहंशाह अकबर ने अगले पल ही हुक्म दिया कि इस बूढ़ी औरत को तलवार के वजन के बराबर सोना दिया जाए। शहीद की विधवा और मां दोनों ही अकबर और बीरबल को दुआएं देते हुए दरबार से बाहर चली गईं। किसी भी बात को ढंग से कहा जाए तो उसका परिणाम अच्छा ही होता है।

दूध भाई

एक शाम बादशाह अकबर ने बीरबल से कहा, ''बीरबल, हमारी दाई मां का बेटा हमारा दूध भाई है, क्योंकि मैंने दाई मां का दूध पीया है। क्या तुम्हारा भी कोई दूध भाई है?''

बीरबल बोले, ''जी, जहांपनाह, है।'' बादशाह ने चुटकी लेते हुए कहा, ''तो तुम उसे दरबार में क्यों नहीं लाते हो?''

बीरबल ने कहा, ''जहांपनाह, वह अभी नन्हा-सा बच्चा है। दरबार में उसे नहीं ला सकता।''

शहंशाह अकबर बोले, ''छोटा है तो क्या हुआ, कल तुम उसे दरबार में ले आओ।''

अब बीरबल मना भी तो नहीं कर सकते थे। वह बोले, ''हुजूर, मैं आपके हुक्म का पालन करूंगा।'' घर आकर बीरबल ने गाय के बछड़े को खूब सजाया और दूसरे दिन उसे दरबार में लेकर पहुंच गए।

अकबर हैरान होते हुए बोले, ''बीरबल, यह क्या है?''

बीरबल सिर झुकाकर बोले, ''हुजूर, यह मेरा दूध भाई है।''

बादशाह बोले, ''क्या बछड़ा तुम्हारा दूध भाई है?''

जवाब में बीरबल ने कहा, ''हां, यही है। जिस गाय का मैं दूध रोज पीता हूं, यह उसी गाय का बछड़ा है।''

बादशाह अकबर बीरबल की इस बुद्धिमत्ता पर खुश हो गए।

जिसका हम खाते हैं, उसका आदर करना चाहिए।

शराब का शौक

बादशाह अकबर को बुढ़ापे में न जाने कैसे शराब की लत लग गई। रात में जब वह अपने नवरत्नों के साथ होते तो उनसे छिपकर थोड़ी-सी पी लेते थे। एक रोज बीरबल ने बादशाह अकबर को शराब पीते हुए देख लिया। उस समय तो बीरबल ने कुछ नहीं कहा लेकिन एक रोज वह उस कमरे में पहुंच गए, जहां बादशाह

शराब रखते थे। बीरबल ने कमरे की चीजों को इधर-उधर बिखेरकर शराब की बोतल को दुशाले से ढककर बगल में दबाया और धीरे से बाहर निकल गए। बादशाह अकबर ने बीरबल को कमरे से निकलते हुए देख लिया लेकिन वह यह सोचकर शांत ही रहे कि बीरबल किसी काम से कमरे में गए होंगे। लेकिन फिर भी बादशह को तसल्ली नहीं हुई तो उन्होंने बीरबल को बुलाया।

बीरबल अकबर बादशाह के सामने बगल में शराब की बोतल दबाए आ खड़े हुए। बादशाह ने बीरबल को गौर से देखते हुए पूछा, ''बीरबल, तुम्हारी बगल में क्या है?''

बीरबल बोले, ''हुजूर, क्या कह रहे हैं? कुछ भी तो नहीं है।''

बीरबल की बातों पर अकबर को विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने दोबारा वही सवाल कर दिया।

बीरबल बोले, ''हुजूर, मेरी बगल में तोता है।''

अकबर बादशाह बीरबल पर नाराज हो गए और थोड़ी ऊंची आवाज में बोले, ''बीरबल, यह मेरा हुक्म है। सच बोलो, क्या है?'' बीरबल सिर झुकाकर बड़ी अदब से बोले, ''हुजूर, घोड़ा है।''

बादशाह अकबर आश्चर्य में पड़ गए और कहने लगे, ''बीरबल, आज तुम कोई नशा तो करके नहीं आए हो? उलटा-पुलटा क्या बक रहे हो, सच क्यों नहीं बोलते?'' बीरबल बेखौफ होकर बोले– 'हुजूर, हाथी है।''

अकबर बादशाह भौंहें चढ़ाते हुए बोले, ''बीरबल, इस बदतमीजी की सजा क्या है, तुम्हें मालूम भी है। बोलो, तुम्हारी बगल में क्या है?''

बीरबल बादशाह अकबर के क्रोध से बेखबर बोले, ''हुजूर, गधा है।''

बादशाह अकबर बीरबल को दंडित भी तो नहीं कर सकते थे। क्योंकि वह उनके नवरत्नों में से एक थे। वह शांत स्वर में बोले, ''बीरबल, पहेलियां क्यों बुझा रहे हो?क्या है तुम्हारी बगल में?''

बीरबल इस बार सच बोले, ''शराब है, हुजूर।'' यह बोलकर बीरबल ने बगल से बोतल निकाली और बादशाह के सामने रख दी।

बादशाह अकबर को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और उन्होंने मन-ही-मन सोचा, ''अच्छा, तो बीरबल भी शराब पीते हैं?'' यह सोचते हुए अकबर ने एक सेवक से कहा, ''बीरबल को आराम से घर पहुंचा देना।'' अकबर बादशाह के मन में यह बात थी कि बीरबल आज होश में नहीं हैं। उन्होंने अवश्य ही शराब पी है।

बीरबल चुपचाप घर आ गए। शाम के समय जब नवरत्नों की महफिल जमी तो बीरबल भी महफिल में आ गए।

बादशाह अकबर को बड़ा ही ताज्जुब हुआ। उन्होंने बीरबल से पूछा, ''अब आपकी तबीयत कैसी है, बीरबल?''

बीरबल चौंकते हुए बोले, ''हुजूर, मेरी तबीयत को क्या हुआ था?''

अकबर बादशाह बोले, ''बीरबल, तुम ठीक-ठाक न होते तो क्या शराब की बोतल बगल में छिपाकर पूछने पर यह बोलते कि घोड़ा है, हाथी है, गधा है, तोता है?''

बीरबल तो मौके की ही तलाश में थे। बड़े ही शांत स्वर में बोले, ''हुजूर, मैं उस समय न तो बेहोश था और न ही मदिरापान किया था। लेकिन जो कुछ भी बोला था, वह बिल्कुल सच था।''

''तुम होश में तो हो, बीरबल?'' अकबर बादशाह ने बीरबल को देखते हुए पूछा।

''हुजूर, गुस्सा न करें। पहली बार जब आपने पूछा कि बगल में क्या है तो मैंने कहा, कुछ नहीं। हुजूर, यह ठीक ही तो है– पहला प्याला पीने पर आदमी को कुछ भी पता नहीं चलता, किंतु दूसरा प्याला पीते ही उसकी आवाज तुतलाने लगती है। मैंने आपके दोबारा पूछने पर इसीलिए तो कहा था– तोता है। शराब का तीसरा प्याला गले से नीचे उतरते ही आदमी घोड़े की तरह हिनहिनाने लगता है, इसीलिए तीसरी बार पूछने पर मैंने कहा था, घोड़ा है। चौथा प्याला गले से नीचे उतरते ही आदमी मतवाला हो जाता है, इसीलिए आपके चौथी बार पूछने पर मैंने कहा था, बगल में हाथी है। पांचवीं बार जब आपने पूछा कि बगल में क्या है तब मेरा जवाब गधा था, क्योंकि पांचवां प्याला हलक से उतरते ही आदमी गधा बन जाता है। जो चाहो उससे करवा लो। जो चाहो, उस पर लाद दो या नाली में फेंक दो। छठवां प्याला हलक से उतरते ही आदमी अपना होश खो देता है, इसीलिए जब आपने छठवीं बार पूछा तो मैंने पूरी बोतल ही आपके

सामने रख दी।'

अपनी हाजिरजवाबी के लिए मशहूर चतुर बीरबल को अकबर ने उठकर गले से लगा लिया। फिर वह उस कमरे में चले गए जहां उन्होंने शराब की बोतल रखी थी। बोतल वहां नहीं थी और कमरे की चीजें बिखरी हुई थीं। बादशाह अकबर को यह समझने में देर न लगी कि यह सब बीरबल का ही किया धरा है और उन्होंने मेरे भले के लिए ही इतना सबकुछ किया। इसके बाद तो अकबर बीरबल से और भी अधिक प्रभावित हुए और न सिर्फ उन्हें इनाम से नवाजा, बल्कि बादशाह ने शराब पीनी भी छोड़ दी।

दो और पत होते हैं

बादशाह और बीरबल महल के सामने वाले बाग में बैठे बातें कर रहे थे। तभी बादशाह अकबर ने कहा, ''पत पांच होते हैं– पानीपत, बलपत, इंद्रपत, बागपत, सोनीपत।''

बीरबल मुस्करा पड़े, फिर बड़े ही गंभीर होकर बोले, ''जहांपनाह, दो पत और भी होते हैं।''

बादशाह चौंकते हुए बोले, ''बीरबल, अब तुम किस पत की बात कर रहे हो?''

''जहांपनाह!'' बीरबल ने कहा, ''मैं ठीक ही तो कह रहा हूं। दो और पत होते हैं– रखपत तथा रखापत।'

बादशाह ने चौंकते हुए कहा, ''तुम क्या कह रहे हो, बीरबल?मैं तो कुछ भी नहीं समझा?'

बीरबल ने कहा, ''हुजूर, इंसानियत की परख इन्हीं पतों से होती है। जब व्यक्ति दूसरों की इज्जत की हिफाजत करता है, तभी उसकी भी इज्जत की हिफाजत होती है।'' इसी को रखपत और रखापत कहते हैं।

अकबर बादशाह बहुत खुश हुए और बोले, ''बहुत खूब बीरबल, रखपत और रखापत का मतलब मैं अब समझ गया।''' जब हम किसी की इज्जत करते हैं, तभी हमारी भी इज्जत होती है।

बीरबल की नेक सलाह

शहंशाह अकबर किसी बात को लेकर अपनी बेगम से खफा हो गए और हुक्म दे दिया कि वह महल छोड़कर चली जाएं। बेगम काफी चिंतित हो गईं और उन्होंने शहंशाह को मनाने की बहुत कोशिश की, पर बादशाह पर कोई फर्क नहीं पड़ा। बहुत सोचने-विचारने के बाद बेगम ने बादशाह की आज्ञा का पालन करना ही ठीक समझा। अपनी बांदी से सामान बांधने को कहकर बेगम स्वयं बादशाह के पास आकर उनसे माफी मांगने लगीं। बादशाह को उन पर थोड़ी-सी भी दया नहीं आई। वह बेगम से बोले, ''बेगम, तुम चाहो तो महल से अपनी पसंद की चीज ले जा सकती हो।''

बेगम की बेचैनी और भी अधिक बढ़ गई। वह समझ नहीं पा रही थीं कि अब क्या करें? तभी उन्हें बीरबल की याद आई, फिर बेगम ने बीरबल को दरबार में बुलाया। बीरबल ने जब सारी बातें सुन लीं तब बेगम ने कहा, ''बीरबल, बादशाह को खुश करने का कोई उपाय हो तो बताओ।'' बीरबल मुस्कराए और उन्हें एक उपाय बताकर चले गए।

अब बेगम का सारा सामान गाड़ियों पर रखा जाने लगा। बेगम के लिए डोली सजाई जाने लगी। डोली में बैठने से पहले बेगम बादशाह अकबर के पास आईं और रोनी-सी सूरत बनाकर बोलीं, ''जहांपनाह, जब मैं महल छोड़कर सदा के लिए जा ही रही हूं तो आप मेरी अंतिम इच्छा स्वीकार कर लीजिए। मैं अपने हाथों से आपको एक गिलास शर्बत पिलाना चाहती हूं, न मालूम फिर कभी कभी आपसे मिलना हो या न हो।''

इस बार बादशाह अकबर का दिल पसीज गया। उन्होंने सहर्ष आज्ञा दे दी। बेगम ने आज्ञा मिलते ही बादशाह को प्रेमपूर्वक शर्बत पिलाया। शर्बत में पहले से

ही नशीली दवा मिली हुई थी। बादशाह शर्बत पीते ही नशे के कारण सो गए। मौका मिलते ही बेगम एक डोली में बादशाह को लेटाकर स्वयं उनके साथ बैठ गईं।

बादशाह की नींद टूटी, तब स्वयं को बेगम के साथ एक अनजान जगह पर देखकर बादशाह अकबर की समझ में कुछ भी नहीं आया। बेगम शहंशाह को पंखे से हवा करते हुए मुस्करा रही थीं।

बादशाह अकबर ने बेगम से पूछा, ''हम कहां हैं और आप हमें यहां किसके हुक्म से लाई हैं?''

बेगम ने सिर झुकाकर नरम आवाज में कहा, ''जहांपनाह, आपने ही तो हुक्म दिया था कि मैं महल से अपनी पसंद की चीज साथ ले जा सकती हूं। हुजूर, इस दुनिया में ऐसी कोई भी चीज नहीं, जो मुझे आपसे अधिक पसंद हो। महल में जो मुझे सबसे अधिक पसंद है, वह आप हैं इसीलिए मैं आपको अपने साथ लाई।'' बेगम के इतना कहते ही बादशाह का गुस्सा काफूर हो गया और उन्होंने बेगम को क्षमा कर दिया। महल में वापस आने पर बेगम ने बीरबल को हीरे-जवाहरात दिए और उनका बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। ●

कुत्ता और दामाद

शहंशाह अकबर ने एक बार बीरबल से कहा, ''बीरबल, क्या तुम ऐसे प्राणी ला सकते हो, जिनमें से एक उपकार को मानता हो और दूसरा उपकार के बदले अपकार करने की सोचता हो?''

बीरबल कुछ देर तक चुप रहे, फिर 'हां' में सिर हिलाकर चले गए। दूसरे दिन बीरबल एक कुत्ता और अपने दामाद को लेकर दरबार में आए। फिर वह सिर झुकाकर बादशाह अकबर से बोले, ''हुजूर, मैं दोनों प्राणियों को लेकर आया हूं। इनमें दोनों ही गुन हैं।''

बादशाह अकबर ने कहा, ''ठीक है, लेकिन हमें इनके गुणों का पता कैसे चलेगा?''

बीरबल बोले, ''जहांपनाह, यह कुत्ता है। केवल रोटी का एक टुकड़ा खाकर मरते दम तक अपने स्वामी की रखवाली करता है। इसे डंडे से पीटकर मालिक घर से भगा देता है तब भी यह बुलाने पर भागा-भागा चला आता है और उसी ईमानदारी के साथ मालिक को हर खतरे से बचाता है।'' बीरबल यह कहकर चुप हो गए।

शहंशाह अकबर बोले, 'और दूसरा प्राणी?'' बीरबल थमती आवाज में बोले, ''हुजूर, यह मेरा दामाद है। इसका स्वभाव ऐसा है कि लड़की का पिता अपना सबकुछ इसे क्यों न दे दे और स्वयं फकीर ही क्यों न बन जाए, फिर भी इसे चैन नहीं मिलता।''

अकबर बीरबल की बातें सुनकर क्रोधित हो गए और दामाद को गुस्से से घूरते हुए कहा, ''ले जाओ, दामाद को सूली पर लटका दो और कुत्ते को दूध पिलाओ।''

बादशाह का हुक्म सुनते ही बीरबल का पसीना छूट गया। वह सिर झुकाकर नम्र स्वर में बोले, ''हुजूर, मेरी बात को समझें। मैंने जो भी कुछ कहा, वह केवल अपने दामाद के लिए नहीं कहा, मैंने तो दुनिया के सारे दामादों की बात कही है। जहांपनाह, क्या मेरे दामाद को ही दंडित करना उचित होगा? आप भी तो किसी के दामाद हैं या यहां पर जितने भी लोग हैं, वे सब किसी न किसी के तो दामाद हैं ही।''

बादशाह अकबर अचानक ही सहम गए और उन्होंने अपना हुक्म वापस ले लिया। ●

शर्मसार हुई बेगम

शहंशाह अकबर बेगमों के साथ बगीचे में फूल तोड़ रहे थे। बादशाह को ढूंढ़ते हुए बीरबल भी बगीचे में आ गए। एक बेगम ने शहंशाह से कहा, ''शहंशाह, आपका दीवान बड़ा ही बातूनी और मसखरा है। हम उससे सवाल पूछना चाहते हैं।''

बादशाह ने बीरबल को इशारे से बुलाया। बीरबल ने

समझा कि बादशाह ने फूल तोड़ने के लिए बुलाया है। वह भी चुपचाप फूल तोड़कर डलिया में रखने लगे।

एक बेगम ने चुटकी लेते हुए कहा, ''यह मजदूर तो बिना मजदूरी के ही फूल तोड़कर डलिया में डालने लगा।''

हाजिरजवाब बीरबल ने झट से कहा, ''बेगम साहिबा, एक मजदूर तो पहले से ही काम पर लगा है। जो मजदूरी आप उसे दें, वही मुझे भी दे देना।''

बेगम शर्म से लाल हो गईं और बादशाह अकबर मुस्करा पड़े।

बीरबल से फिर किसी ने मजाक नहीं किया।

हम जैसा करते हैं वैसा पाते हैं

एक बार की बात है कि शहंशाह अकबर और बीरबल बगीचे में टहल रहे थे। अचानक बादशाह के दिमाग में एक सवाल आ गया। वह बीरबल की ओर देखते हुए बोले, ''बीरबल, इस संसार में कोई गरीब है और कोई अमीर है। क्या बता सकते हो ऐसा क्यों है? खुदा तो समदर्शी है और वह सबका ही मालिक है और सभी उसकी संतान है। एक पिता तो अपनी संतान का सदा भला चाहता है और सभी को एक समान देखता है। फिर खुदा परम पिता होकर क्यों किसी को अमीर बना देता है और किसी को दो जून की रोटी के लिए भी तरसाता है?' बादशाह अकबर यह कहकर चुप हो गए।

बीरबल बहुत सोचने के बाद बोले, ''हुजूर, खुदा ऐसा न करे तो कोई उसे खुदा मानेगा ही नहीं। दुनिया में पांच पिता होते हैं। आप भी उन पांच में से एक हैं अर्थात् अपनी प्रजा के पिता हैं। आप तो किसी को दो सौ, किसी को चार सौ, किसी को सौ तो किसी को डेढ़ सौ और किसी को कवल चार-पांच रुपये की तनख्वाह देते हैं। जहांपनाह, आप ऐसा क्यों करते हैं? सबको एक नजर से क्यों नहीं देखते?''

बादशाह अकबर निरूत्तर हो गए और काफी सोच में पड़ गए। बीरबल समझ गए कि बादशाह असमंजस की स्थिति में हैं। अत: बीरबल बोले, ''हुजूर, इसमें इतना दिमाग लगाने की जरूरत नहीं है। जो जिस तरह का काम करता है, वैसी ही उसको मजदूरी मिलती है और संसार ऐसे ही चलता है। यदि ऐसा न हो तो संसार चल ही नहीं सकता। ईश्वर कर्मों के अनुसार फल देता है। उसकी यह इच्छा कभी नहीं होती कि संसार के प्राणी दु:ख उठाएं। ईश्वर तो सबका भला चाहता है, अब कोई उसके बताए रास्ते पर नहीं चलता है तो उसे उसके कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। जो परिश्रम करता है, अच्छा कर्म करता है, वह धनवान बनता है और जो कामचोर होता है, वह गरीब होता है। ईश्वर तो वही देता है, जो हम करते हैं, हुजूर।'' बीरबल की बातों से अकबर बादशाह खुश हो गए और बीरबल की तारीफ करते हुए अपने महल की ओर लौट गए।

साधु का तोता

एक साधु को तोते पालने का शौक था। वह नित्य एक नया तोता जंगल से पकड़कर ले आता और उसे अच्छी-अच्छी बातें सिखाकर शहर के रईसों को दे देता। रईस बदले में उसे कुछ धन दे देते थे और उस धन से वह साधु अपना और अपने शिष्यों का पालन-पोषण करता था।

एक बार साधु ने एक ऐसा तोता पकड़ा, जो होशियार और तेज दिमाग का था। वह तोता कम समय में ही बहुत कुछ सीख गया। साधु बहुत ही खुश हुआ कि उस तोते से उसे काफी धन प्राप्त होगा। साधु ने निश्चय किया कि यह तोता बादशाह के पास होना चाहिए। उन्हें इसे भेंटकरके वह अधिक से अधिक धन

प्राप्त कर सकेगा। तोता जब पूरी तरह से सीख-पढ़ गया तब एक दिन साधु दरबार में पहुंचा और बादशाह अकबर को सप्रेम भेंट कर दिया।

बादशाह ने तोते को बहुत पसंद किया, क्योंकि वह तोता सवाल पूछने पर जवाब भी देता था। बादशाह ने अपने एक सेवक को वह तोता सौंपते हुए कहा, ''तुम्हें इस बात का पूरा ध्यान रखना है कि तोते के स्वभाव में किसी भी तरह का दोष न आने पाए। जो भी हमें यह खबर देगा कि तोता मर गया है, वह अपनी जान से जाएगा।''

सेवक ने तोते को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में रखना शुरू कर दिया। फिर भी एक दिन तोते की अचानक ही मृत्यु हो गई। सेवक को जब बादशाह की चेतावनी याद आई तो वह काफी घबरा गया और सीधे बीरबल के पास चला गया। एक सांस में ही उसने बीरबल को सारी कहानी कह सुनाई।

चतुर बीरबल बोले, ''तुम चिंता न करो और अपने काम में लगे रहो।'' यह कहकर बीरबल अकबर बादशाह के यहां पहुंच गए और अचानक ही कहने लगे, ''जहांपनाह, तोते ने तो.....''

शहंशाह कुछ समझ न सके और घबराई हुई आवाज में बोले, ''बीरबल, क्या बक रहे हो? तोता तो ठीक है न?कहीं वह मर तो नहीं गया?'' बीरबल बोले, ''हुजूर, कैसी बात कर रहे हैं। तोता मरा नहीं, उसने समाधि ले ली है। आज सुबह से न कुछ खा रहा है, न पी रहा है, न बोल रहा है, न देख रहा है और न पंख फड़फड़ा रहा है।''

अकबर बादशाह यह सुनकर चौंक पड़े और उठकर जहां तोता था, उधर बढ़ गए। वहां पहुंचकर उन्होंने देखा कि तोता वास्तव में ही मर गया है। अकबर बादशाह बहुत दु:खी हुए और बीरबल से कहने लगे, ''बीरबल, क्या तुम यह नहीं कह सकते थे कि तोता मर गया है?''

बीरबल सिर झुकाकर बोले, 'हुजूर, मैं यह कैसे कहता कि तोता मर गया है। क्या आपकी चेतावनी मुझे याद नहीं कि 'तोता मर गया है' की खबर देकर अपनी जान गंवाता?'' बीरबल के इतना कहने पर बादशाह को अपनी चेतावनी याद आई लेकिन बीरबल की बुद्धिमत्ता के आगे वह निरूत्तर रह गए।

नाई गया स्वर्ग में

बीरबल बहुत ही बुद्धिमान और हाजिरजवाब थे, जिससे उन्हें ज्यादातर लोग पसंद करते थे और इसके साथ ही कुछ लोग बीरबल की हाजिरजवाबी के कारण उनसे जलते भी थे। बीरबल से जलने वालों ने एक दिन बीरबल को हमेशा के लिए रास्ते से हटाने का निर्णय लिया। अकबर बादशाह का जो हज्जाम था, इस काम के लिए बीरबल के दुश्मनों ने उससे सहायता मांगी। हज्जाम पहले तो तैयार नहीं हुआ लेकिन जब उन्होंने उसे हीरो-मोतियों से लाद देने का लालच दिया तो वह हज्जाम डरते-डरते ही सही, पर तैयार हो गया।

अगली सुबह हज्जाम महल में बादशाह अकबर की हजामत बनाने पहुंचा। बादशाह सलामत चुपचाप हजामत बनवाने लगे।

हज्जाम बाल काटते हुए बोला, ''जहांपनाह, मैं..., यह कहते-कहते हज्जाम चुप हो गया।'' बादशाह बोले, ''बोलते-बोलते रुक क्यों गए? जो कहना है बेहिचक कहो।''

''हुजूर, आप तो अपने स्वर्गवासी पुरखों के विषय में कभी सोचते-विचारते ही नहीं।'' हज्जाम इतना बोलकर चुप हो गया। बादशाह की रुचि हज्जाम की बातों में बढ़ गई। वह बोले, ''मैं उनके लिए लाख सोचने के बाद भी कुछ नहीं कर सकता, वे तो अब जिंदा ही नहीं हैं।''

हज्जाम की अब हिम्मत बढ़ गई। वह बोला, ''जहांपनाह, आपके पुरखे स्वर्ग में ही तो हैं। वहां किसी को भेजकर यह तो जाना ही जा सकता है कि वे किस हाल में हैं।'' 'क्या ऐसा हो सकता है?' बादशाह के चेहरे पर खुशी पसर गई। उन्हें हजाम की सलाह काफी पसंद आई। वे बोले, ''लेकिन किसी को स्वर्ग में कैसे भेजा जा सकता है?'' हज्जाम

मन-ही-मन खुश होते हुए बोला, ''यह तो बहुत ही आसान काम है, हुजूर। किसी खुले स्थान में चिता सजाकर उसमें किसी बुद्धिमान व्यक्ति को बैठा दिया जाए तो वह चिता की लपटों के साथ सीधे स्वर्ग में पहुंच जाएगा।'' हजाम की यह योजना बादशाह को भी पसंद आई। लेकिन उन्होंने अगले पल ही सवाल कर दिया, ''योजना तो ठीक है, पर इस तरह से जलने को कौन तैयार होगा?''

हज्जाम ने सुझाव दिया, ''जहांपनाह, बीरबल राज्य के सबसे चतुर व बुद्धिमान व्यक्ति हैं। इस कार्य के लिए उनसे अधिक योग्य दूसरा कोई व्यक्ति नहीं हो सकता।''

अकबर बादशाह यह सुनकर गंभीर हो गए, क्योंकि वह समझ गए थे कि बीरबल को जान से मारने के लिए चाल चली जा रही है, फिर भी वह अनाड़ी ही बने रहे और बोले, ''बहुत खूब, हां, इस काम के लिए बीरबल ही सही व्यक्ति रहेंगे।'' हज्जाम बाल काट कर चला गया। बदशाह अकबर ने दरबार में आते के साथ ही इस योजना की घोषणा दरबार में कर दी। इसके बाद बीरबल को देखते हुए कहा, ''बीरबल, अब तुम ही स्वर्ग जाओ और वहां से लौटकर हमें बताओ कि हमारे पुरखों को किस चीज की जरूरत है।'' बीरबल बोले, ''हुजूर, आप के मन में यह विचार कहां से आया?''

बादशाह अकबर बोले, ''यह विचार मेरे मन की उपज नहीं है। यह विचार तो हमारे हज्जाम के मन की उपज है। उसी ने हमें यह विचार सुझाया।''

बीरबल ने बादशाह के कहने का मतलब अच्छी तरह से समझ लिया और मन-ही-मन ठान लिया कि उस हज्जाम को सबक सिखाना है। बीरबल ऐसा सोचते हुए बोले, ''जहांपनाह, आपने मुझे इस काबिल समझा, शुक्रिया। मैं स्वर्ग की यात्रा पर जाने के लिए तैयार हूं। हुजूर, लेकिन मुझे कुछ दिन का समय दीजिए ताकि मैं अपने परिजनों के लिए जरूरत की चीजों का प्रबंध कर सकूं।'' अकबर बादशाह ने बीरबल को कुछ दिनों का समय दे दिया और चिता भी तैयार करने का हुक्म जारी कर दिया।

बीरबल ने इस बीच चिता की जगह को जाकर देखा, फिर चिता के स्थान से अपने घर तक अंदर-ही-अंदर एक सुरंग खुदवानी आरंभ कर दी। बीरबल के चिता पर बैठने की तारीख आ गई। नगर के सारे लोग वहां आकर जमा हो गए। बीरबल सुरंग के द्वार से सटकर लेट गए और दरबारी कारिंदों ने उनके चारों तरफ लकड़ियां सजा दीं।

देखते-ही-देखते चिता धू-धू करके जल उठी। बीरबल को चाहने वाले आंसू बहा रहे थे और ईर्ष्या करने वाले खुश हो रहे थे। लेकिन चतुर बीरबल तो सुरंग से होते हुए अपने घर पहुंच गए थे।

कुछ महीनों के बाद बीरबल दरबार में आए तो उनके हितेषी और शत्रु दोनों ही चकित रह गए कि एक मरा हुआ व्यक्ति पुनः जिंदा कैसे हो गया? वह बड़ी मुश्किल से पहचान में आ रहे थे। क्योंकि उनकी दाढ़ी बेतरतीव बढ़ी हुई थी। बीरबल शहंशाह अकबर को सलाम करते हुए बोले, ''मेरे मालिक! मैं सीधा स्वर्ग से यहां आ रहा हूं। आपके पुरखों की भी खबर लेकर आया हूं।'' बादशाह अकबर प्रसन्न होते हुए बोले, ''बीरबल, तुम ठीक तो हो? स्वर्ग में मेरे सब पुरखे कैसे हैं?''

बीरबल बोले, ''जहांपनाह, वहां किसी बात की कोई कमी नहीं है। चारों तरफ अमन-ही-अमन है। हां, वहां पर एक चीज की कमी है।''

''बोलो बीरबल, हम वह चीज वहां भेजवाने की कोशिश करेंगे।'' बादशाह सिंहासन से यह कहते-कहते खड़े हो गए। बीरबल बोले, ''हुजूर, वहां कोई ढंग का हज्जाम (नाई) नहीं है। आपके पुरखों ने कहा है कि कोई ढंग का हज्जाम फौरन यहां भेजा जाए। हुजूर, स्वर्ग में पहुंचने का रास्ता तो हम सबको मालूम हो ही गया है। वहां अब किसी को भी भेजना हमारे लिए कठिन नहीं रहा।'' शहंशाह अकबर बोले, ''हां, तुम्हारी बात तो सही है, पर वहां किस हज्जाम को भेजा जाए?''

बीरबल अब कहां चूकने वाले थे। वह झट से बोले, ''हुजूर, इसमें भी कोई पूछने की बात है। आपका शाही हज्जाम वहां जाएगा। उससे बेहतर हजामत और कौन बना सकता है, हुजूर।''

''ठीक है बीरबल, हम शाही हज्जाम को ही स्वर्ग भेज देते हैं।''

फिर क्या था। बादशाह अकबर ने शाही हज्जाम को स्वर्ग जाने का हुक्म दे दिया। हज्जाम को षड्यंत्रकारियों का साथ देने का अच्छा फल मिला। वह बेमौत मारा गया। ●

बीरबल की पारखी नजर

एक बार दरबारियों के साथ मिलकर अकबर बादशाह ने यह योजना बनाई कि देखें बीरबल को सच्चे दीन-दुखियों की पहचान है या नहीं। अतः बादशाह अकबर ने एक सैनिक को दीन-हीन की वेशभूषा में बीरबल के पास यह कहकर भेजा कि यदि वह बीरबल से कुछ धन लेकर आएगा तो इसके बदले में हम स्वयं उसको इनाम देंगे।

बीरबल मंदिर से पूजा-अर्चना कर वापस आ रहे थे, तभी दीन-हीन के वेश में वह सैनिक आकर बीरबल के सामने खड़ा हो गया और कहने लगा, "हुजूर, मेरा पूरा परिवार एक हफ्ते से भूखा है। मैं स्वयं कई दिनों का भूखा हूं। ईश्वर का कहना है कि भूखों को खाना खिलाना पुण्य का काम है।

हुजूर, आप मुझे दान करके अवश्य ही पुण्य कमाएंगे। आप तो महादानी हैं।''

बीरबल ने उस दीन-हीन को ऊपर से नीचे तक देखा और अगले पल ही समझ गए कि यह ऊपर से जैसा है, अंदर से वैसा नहीं है। बीरबल ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और आगे बढ़ गए। वह दीन-हीन भी उनके साथ चल पड़ा। बीरबल नदी के तट पर आकर खड़े हो गए, क्योंकि उनको नदी के उस पार जाना था। उन्होंने नदी पार करने के लिए जूती उतारकर हाथ में ली तो उस दीन-हीन ने भी अपनी फटी-पुरानी जूती उतारकर हाथ में ले ली। बीरबल ने जब नदी पार कर ली तब वह कंकरीले रास्ते से नंगे पांव ही आगे बढ़ गए। लेकिन वह दीन-हीन कंकरीला रास्ता देखते ही खड़ा हो गया और झुक कर अपनी जूती पहन ली, फिर वह चलने लगा। कुछ दूर तक वह बीरबल के साथ चला फिर याचना भरी आवाज में वह बोला, ''हुजूर, आप तो बादशाह अकबर के दीवान हैं। सुना है बड़े दानी हैं। मुझ दीन-हीन की पुकार लगता है आपने सुनी नहीं।''

बीरबल बोले, ''जो मुझे पापी बनाए, भला मैं उसको दान कैसे दे सकता हूं?''

वह सैनिक चौंककर बोला, ''कैसी बात कर रहे हैं, हुजूर? क्या मुझे दान देने से आप पापी हो जाएंगे?''

''हां, मैं पापी हो जाऊंगा, शास्त्र कहते हैं कि शिशु का जन्म होने से पहले ही ईश्वर उसके भोजन की व्यवस्था मां के स्तनों में दूध देकर कर देता है। ईश्वर व्यक्ति को भूखा उठाता है पर भूखा सुलाता नहीं है, और तुम अपने आप को कई दिनों का भूखा बता रहे हो। इन सब बातों को देखने से तो यह लगता है कि ईश्वर तुमसे नाराज है। वह तुम्हें और तुम्हारे परिवार को भूखा ही रखना चाहता है। मैं तो ईश्वर का सेवक हूं, उसकी मर्जी के खिलाफ मैं तुम्हें धन दे दूं तो वह मुझसे भी नाराज हो जाएगा। मैं ईश्वर के कार्यों में दखल नहीं दे सकता। माफ करना, मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता, ऐसा तो कोई पापी ही कर सकेगा।''

बीरबल के इतना कहने पर वह दीन-हीन अवाक् रह गया और चुपचाप वहां से चला गया। दरबार में आकर उसने सारी बातें बता दीं। दूसरे दिन शहंशाह दरबार में आए तो बीरबल से कहा, ''बीरबल, तुम तो अपने आपको बहुत बड़ा दानी कहते हो। लोग भी तुम्हें धर्म-कर्म वाला मानते हैं। हम भी तुम्हें एक रहम दिल और दयालु प्रवृत्ति का इंसान मानते हैं। हमें अफसोस है कि तुमने कल एक भूखे गरीब को खाली हाथ लौटा दिया। बीरबल, तुमने ऐसा क्यों किया?''

''जहांपनाह!'' बीरबल मुस्कराते हुए बोले, मैंने किसी गरीब को खाली हाथ नहीं लौटाया बल्कि एक छद्म वेशधारी को वापस लौटा दिया और मुझे इस बात की भी जानकारी है कि वह ढोंगी दीन-हीन कोई और नहीं आपका ही सैनिक था और मेरी परीक्षा लेने के लिए आपने ही उसे भेजा था।'' बीरबल के इतना कहते ही दरबारियों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अकबर बादशाह चौंकते हुए बोले, ''बीरबल, तुम्हें यह सब कैसे मालूम हुआ?''

''हुजूर, उसके पांवों को देखकर। उसके पांव चिकने और कोमल थे। जब उसने कंकरीले रास्ते पर चलने के लिए जूती पहन ली तो मैं फौरन ही समझ गया कि यह कोई भूखा गरीब नहीं है। इसको तो नंगे पांव जमीन पर चलने की आदत ही नहीं है। जरूर बादशाह सलामत ने इसे यह देखने के लिए भेजा है कि बीरबल को सच्चे दीन हीन की पहचान है या नहीं।'' बीरबल यह कहकर चुप हो गए।

शहंशाह अकबर बीरबल को गर्व से देखते हुए बोले, ''मुझे तुम पर और तुम्हारी अक्लमंदी पर गर्व है, बीरबल। तुमको धोखा देना इतना सरल नहीं है।''

सच और झूठ की पहचान करने के लिए बीरबल की तरह देखने और समझने की जरूरत है। ●

दीपक तले अंधेरा

शाही महल की सबसे ऊंची छत पर बीरबल बादशाह अकबर के साथ बैठे गुफ्तगू कर रहे थे। तभी उन्होंने सामने देखा, कुछ दूरी पर कुछ लोग एक राहगीर को लूट रहे थे। राहगीर अपने सामान को बचाने की कोशिश में था लेकिन वह अकेला राहगीर इतनें लोगों के आगे हार गया और उसका कोई वश न चला। राहगीर पिट भी गया और उसका सब माल-असबाब भी उससे छिन गया। वह लहूलुहान राहगीर बादशाह

सलामत के किले के नजदीक आया और चीख-चीखकर कहने लगा, ''यह बड़ी शर्म और आश्चर्य की बात है, बादशाह के सामने ही लुटेरे मेरा सामान लूटकर भाग गए।'' उसकी चीख-पुकार बादशाह के कान में पड़ी तो उन्हें भी बड़ा कष्ट हुआ और उन्होंने बीरबल को फटकारते हुए कहा, ''क्या बीरबल, यह है तुम सबकी शासन व्यवस्था? जब हमारी आंखों के सामने ही हमारी प्रजा लुट जाती है तब हमारी आंखों के पीछे यहां क्या नहीं होता होगा?''

बीरबल ने बड़ी ही नम्रता से कहा, ''जहांपनाह, क्या आपको यह कहावत नहीं मालूम कि दीपक दूसरों को रोशनी देता है, पर उसके तले अंधेरा ही रहता है?''

शहंशाह अकबर अवाक् रह गए। बीरबल के कहने का आशय था कि प्रशासन की नाक के तले ऐसा ही होता है, जब कर्मचारी घूसखोर होते हैं।

बीरबल ने बातों-ही-बातों में बादशाह को यह समझा दिया था कि यह सब प्रशासन में ढील देने का नतीजा है। ●

श्रेष्ठ हथियार वही, जो मौके पर काम आए

बादशाह अकबर ने दरबार में आते ही सवाल कर दिया, ''सबसे श्रेष्ठ और उत्तम हथियार कौन-सा है?''

एक दरबारी उठकर बोला, ''जहांपनाह, भाला.... भाला उत्तम हथियार है।''

दूसरा दरबारी बोला, ''नहीं हुजूर, तलवार।''

तीसरा दरबारी बोला, ''नहीं जहांपनाह तीर-कमान।''

बादशाह को दरबारियों के जवाब से संतुष्टि नहीं मिली तो उन्होंने बीरबल की ओर देखा और कहा, ''तुम्हारा क्या जवाब है, बीरबल?'

बीरबल सोचते हुए बोले, ''हुजूर, मेरे विचार से उत्तम हथियार वही है, जो समय पर काम आए और अपनी श्रेष्ठता साबित कर दे।'

बादशाह अकबर असंतुष्ट होते हुए बोले, ''यह कोई जवाब नहीं हुआ बीरबल।''

बीरबल बोले, ''जहांपनाह, मैं अपनी बात को सिद्ध करके दिखा दूंगा।''

अगली सुबह बीरबल अकबर बादशाह के साथ सैर के लिए निकले। बीरबल ने अपनी बात सिद्ध करने के लिए पहले से ही योजना बना ली थी। घूमते-घूमते वे दोनों एक सड़क पर में आ गए। इतने में गली में अचानक एक क्रोधित हाथी तेज गति से आता हुआ दिखाई दिया।

बीरबल घबराई हुई आवाज में बोले, ''हुजूर! हाथी तो सनकी लगता है। देख नहीं रहे कैसे पैर पटकता हुआ आ रहा है।''

अकबर बादशाह भी घबरा गए, ''हां, बीरबल! हम तो पगलाया हाथी भागता हुआ आ रहा है। हम तो इतनी तेज भाग भी नहीं सकते, बीरबल।'' यह कहते-कहते बादशाह काफी घबरा गए। उन्होंने कमर से लटक रही म्यान पर हाथ रखा तो बीरबल बोले, ''जहांपनाह, यह क्या कर रहे हैं। मदांध हाथी का मुकाबला भला तलवार से कैसे हो सकता है?'' बीरबल यह बोल ही रहे थे कि तभी बादशाह के पैर के पास एक कुत्ते का पिल्ला आ गया। बादशाह ने झट से पिल्ले को उठाया और आ रहे हाथी की सूंड़ की ओर फेंक दिया। कुत्ते का पिल्ला इतना डर गया कि बुरी तरह चिल्लाने लगा। हाथी घबराकर पीछे की तरफ हटता चला गया।

अकबर और बीरबल को भागने का मौका मिल गया। वे भागते हुए एक गली में आ गए। बीरबल बादशाह अकबर को माथे का पसीना पोंछते हुए देखकर बोले, ''अब क्या कहते हैं, हुजूर, मैंने कोई गलत तो नहीं कहा था कि जो मौके पर काम आए, वही श्रेष्ठ हथियार होता है?''

अकबर बादशाह बोले, ''हां बीरबल, कुत्ते का पिल्ला हथियार की गिनती में थोड़े ही आता है। लेकिन उसने ही हमारा बचाव उस मदांध हाथी से किया। मौके पर वह न आता तो आज हम जिंदा न होते। तुम्हारा कहना सही था कि श्रेष्ठ हथियार वही है, जो मौके पर काम आए।'' यह कहकर अकबर बादशाह ने बीरबल की बुद्धिमत्ता का लोहा मानते हुए उन्हें गले से लगा लिया। ●

सूरत से बड़ी सीरत

बादशाह अकबर दरबार में आए तो उन्हें बीरबल कहीं नजर नहीं आए। बादशाह बड़ी बेताबी से उनका इंतजार कर रहे थे, तभी बीरबल दरबार में हाजिर हुए। अकबर बादशाह ने बीरबल को देखते ही सवाल कर दिया, ''बीरबल, हमारी इच्छा है कि हम पिशाचिनी और अप्सरा को एकसाथ देखें।''

बीरबल यह सुनकर थोड़ी देर तक चुप रहे, फिर बोले, ''ठीक है, हुजूर।'' यह कहकर बीरबल दरबार से बाहर आ गए और पूरे दिन वह इसी पर सोचते-विचारते रहे। शाम के समय बीरबल एक वेश्या से मिले और उसे समझा-बुझाकर अगले दिन दरबार में हाजिर होने के लिए तैयार किया।

दूसरी सुबह दरबार लगा तो वह वेश्या बीरबल से आकर मिली। बीरबल अपनी पत्नी और वेश्या को लेकर दरबार में हाजिर हुए। बीरबल ने अपनी पत्नी का परिचय कराते हुए शहंशाह से कहा, ''हुजूर! यह अप्सरा है। मेरा जीवन और मेरा घर इसी के कारण स्वर्ग बना हुआ है।''

शहंशाह बीरबल की बातों से असंतुष्ट होते हुए कहा, ''मैं नहीं मानता। अप्सरा तो खूबसूरत होती है, तुम्हारी स्त्री तो साधारण सी है और दुबली-पतली-भी है। भला यह अप्सरा कैसे हो सकती है?'

बीरबल बोले, ''जहांपनाह, खूबसूरती सीरत और चरित्र की महत्वपूर्ण होती है, रूप की नहीं। इस स्त्री से मुझे स्वार्गिक सुख मिलता है, इसलिए यह अप्सरा है।'' यह कहने के बाद बीरबल ने वेश्या की ओर इशारा किया। उस पर नजर पड़ते ही बादशाह सहसा ही बोल पड़े, ''वाह! क्या सुंदरता है।''

बीरबल बोले, ''जहांपनाह, यह एक वेश्या है, यह महाठागिनी है और गले का फंदा है। यही है पिशाचिनी, जिसको एक बार पकड़ लेती है, उसका सबकुछ बर्बाद करके ही उसका पीछा छोड़ती है, हुजूर।''

बादशाह ने जब बीरबल के मुख से दोनों औरतों के गुणों को सुना तो उनको पिशाचिनी और अप्सरा का अंतर समझ में आ गया।

बुद्धिमानों के बुद्धिमान

बादशाह अकबर अक्सर ही बीरबल की परीक्षा लेते रहते थे और बीरबल हमेशा ही पास हो जाया करते थे।

एक बार शहंशाह ने बीरबल को एक बकरी देते हुए कहा, ''बीरबल, इस बकरी को जितना खाना दिया जाता है, उससे दोगुना खाना तुम्हें देना है। लेकिन बकरी का वजन बढ़ना नहीं चाहिए। मैं एक हफ्ते के बाद स्वयं इसका वजन करूंगा।'' बीरबल अब करते क्या? बादशाह का हुक्म तो हुक्म होता है। बीरबल ने उस बकरी को दोगुना खाना देना शुरू कर दिया।' वजन बढ़ने नहीं देना था, इसलिए हर रात वह एक कसाई को छुरी देकर बकरी के सामने बैठाने लगे। बकरी दिनभर खूब खाती और जब रात को हाथ में छुरी लिए कसाई को देखती तो उसकी हालत बहुत ही खराब हो जाती। न तो वह बैठ पाती और न ही सो पाती। दोगुना खाना खाने के बाद भी उसका वजन नहीं बढ़ा।

एक हफ्ते बाद शहंशाह अकबर के सामने दरबार में बकरी को तोला गया। बकरी का वजन जरा-सा भी नहीं बढ़ा था। जितना पहले था, उतना ही था। शहंशाह अकबर को बहुत ही आश्चर्य हुआ। उन्होंने बीरबल से कहा, ''बीरबल, यह कैसे संभव हुआ, बकरी तो रोज दोगुना खाना खाती है। वजन तो बढ़ना चाहिए।'' बीरबल बोले, ''हुजूर, बकरी का वजन आखिर बढ़ता तो कैसे? हाथ में छुरी लिए एक कसाई रातभर उसके सामने बैठा जो रहता था। जो वह दिन में खाती थी, रात में कसाई की छुरी देखकर सब बराबर हो जाता था।''

''बहुत खूब, बीरबल। तुम्हारी इसी चतुराई के तो हम कायल हैं। तुम बुद्धिमानों के बुद्धिमान हो, बीरबल।'' बादशाह यह कहते-कहते हंस पड़े।

अक्ल का घड़ा

बादशाह अकबर अभी दरबार में आकर बैठे ही थे कि तभी दरबार में लंका के राजा का एक दूत हाजिर हुआ। बादशाह अकबर ने उसका स्वागत करते हुए कहा, "कहो, कैसे आना हुआ?"

दूत सिर झुकाकर बोला, "जहांपनाह, आपके दरबार में एक से बढ़कर एक बुद्धिमान, चतुर तथा हाजिरजवाब

दरबारी हैं। हमारे महाराज ने यहां मुझे एक घड़ा अक्ल लाने के लिए भेजा है।''

बादशाह अकबर यह सुनकर चौंक गए कि भला अक्ल भी कहीं घड़े में भरी जा सकती है? लगता है लंका का राजा हमारी हंसी उड़ाना चाहता है। यह सोचते-सोचते बादशाह को बीरबल की याद हो गई।

बादशाह अकबर ने बीरबल को बुलवाकर उसे यह बात बताई। बीरबल बोले, ''जहांपनाह, अक्ल का प्रबंध तो हो जाएगा, पर इस काम में कुछ हफ्ते लग सकते हैं।''

शहंशाह अकबर ने बीरबल को समय दे दिया। बीरबल अब इस काम में लग गए और एक नौकर से कहा कि वह छोटे मुंह वाले मिट्टी के कुछ घड़ों का इंतजाम करे। नौकर घड़े लेकर आया तो बीरबल नौकर को लेकर कद्दू की बेल तक गए और उन्होंने एक घड़े में एक छोटे कद्दू डाल दिए। इसके बाद उन्होंने बाकी घड़ों में भी इसी तरह से कद्दू रख दिए। फिर बीरबल ने नौकर से कहा, ''इन घड़ों की देखभाल सावधानीपूर्वक करना।' बीरबल यह कहकर कामकाज में लग गए।

समय पूरा हो गया तब बीरबल दरबार में हाजिर हुए। शहंशाह अकबर ने पूछा, ''बीरबल, अक्ल के घड़ों की स्थिति क्या है?''

''जहांपनाह, बस दो हफ्ते का और समय चाहिए, फिर सारे घड़े अक्ल से भर जाएंगे।'' दो हफ्ते बाद बीरबल ने आकर देखा कि घड़े में कद्दू के फल घड़े जितने हो गए हैं। वह बहुत ही खुश हुए और इसके दूसरे दिन बीरबल दरबार में पहुंचे और लंका के दूत को बुलवाया।

लंका का दूत जैसे ही दरबार में हाजिर हुआ, बीरबल के सेवक घड़े लिए दरबार में आ पहुंचे।

बीरबल ने एक घड़ा लंका के दूत को देते हुए कहा, ''लीजिए, अक्ल का घड़ा और जाकर अपने राजा को सादर भेंट कीजिए, परंतु खाली होने पर हमारा यह कीमती घड़ा हमें जैसे का तैसा वापस मिल जाना चाहिए। इसमें रखा अक्ल का फल भी तभी असरदार होगा, जब इसे किसी भी तरह की हानि न पहुंचाई जाए। यानी इसे साबुत ही घड़े से निकाला जाए।''

बीरबल से दूत ने पूछा, ''हुजूर, क्या मैं अक्ल के फल को देख सकता हूं?'' ''हां, देख सकते हैं।'' बीरबल ने आगे कहा, ''यदि आपके राजा को और अक्ल की जरूरत हो तो चिंता की कोई बात नहीं, क्योंकि ऐसे पांच घड़े हमने रखे हुए हैं।''

दूत जब घड़ा देकर दरबार से चला गया तब शहंशाह अकबर अपनी जिज्ञासा को दबा न सके और बीरबल से बोले, ''अक्ल का फल हमें भी तो दिखाओ। तुम्हारे पास अक्ल के अभी पांच घड़े रखे हैं न?''

''हां हुजूर, पांच ऐसे घड़े अभी मेरे पास हैं। मैं अभी हाजिर करता हूं।'' बीरबल ने यह कहते हुए सेवक को घड़े लाने को कहा।

सेवक घड़े लेकर शहंशाह के समीप पहुंचा तो उन्होंने घड़े में झांककर देखा, फिर बादशाह अचानक ही हंस पड़े और बीरबल की पीठ थपथपाते हुए बोले, ''मान गए बीरबल। तुम्हारा भी कोई जवाब नहीं। इस कद्दू को खाकर लंका के राजा की बुद्धि तेज हो जाएगी। चले थे हमें मूर्ख बनाने और...'' शहंशाह यह कहकर हंसने लगे। दरबारी भी अपनी हंसी रोक न सके। बीरबल की चतुराई पर उन सबको ही नाज था।

मूर्खों की गिनती

घोड़ों का एक व्यापारी कुछ घोड़ों को लेकर अरब देश से आया और शहंशाह अकबर से मिला। बादशाह को घोड़े पसंद आ गए और उन्होंने सारे घोड़े खरीद लिए और सौदागर से कहा, ''तुम हमारे लिए और अरबी घोड़े लाओ। तुम अरब से आए हो, इसलिए पेशगी के तौर पर हम तुम्हें हजार रुपये दे रहे हैं।''

सौदागर बहुत ही प्रसन्न हुआ और वापस अरब लौट गया। सौदागर के चले जाने के बाद बीरबल को मालूम हुआ कि वह व्यापारी पेशगी लेकर अपने देश चला गया और बादशाह ने उसका नाम-पता भी नहीं पूछा। उन्हीं दिनों शहंशाह अकबर बीरबल से बोले, ''बीरबल, हमारे राज्य में वैसे तो मूर्ख बहुत ही कम हैं, फिर भी जो मूर्ख हैं, उनके नाम

हम जानना चाहते हैं। इस राज्य में कितने मूर्ख हैं, उनकी गिनती करने का काम हम तुम्हें सौंपते हैं, बीरबल।''

''आपका हुक्म सिर-आंखों पर, हुजूर।'' बीरबल इतना कहकर मूर्खों की गिनती करने के लिए निकल गए।

दो दिन के बाद बीरबल दरबार में आए और मूर्खों की एक सूची बादशाह को दी। उस सूची में बादशाह सबसे ऊपर अपना नाम देखकर भड़क उठे और बीरबल से इसका कारण पूछा। बीरबल सिर झुकाकर बोले, ''जहांपनाह, अरब देश से जो व्यापारी आया था, आपने उसका नाम-पता पूछे बिना ही उसे हजार रुपये पेशगी में दे दिए। यदि वह व्यापारी घोड़े नहीं लाया तो आप उसका क्या बिगाड़ लेंगे? आप तो उसका नाम-पता नहीं जानते। क्या यह मूर्खता भरा काम नहीं है?' शहंशाह अकबर को बीरबल की बात बहुत पसंद आई। वह अपनी गलती पर मन-ही-मन पछताने लगे लेकिन वह थे तो एक शहंशाह। अकड़ते हुए बोले, ''यदि वह व्यापारी घोड़े लेकर आ गया तब....?'' बीरबल ने जवाब में कहा, ''जहांपनाह, फिर मैं आपके नाम के स्थान पर उस व्यापारी का नाम लिख दूंगा।''

शहंशाह अकबर यह सुनकर अचानक ही हंस पड़े। हाजिर जवाब बीरबल भला गलत कैसे हो सकते थे। ●

न कम न अधिक

अपनी छोटी बेटी के बहुत जिद करने पर एक दिन बीरबल उसे दरबार में लेकर आए। उनकी बेटी भी उनकी तरह ही हाजिरजवाब और वाचाल थी। अकबर बादशाह को जब मालूम हुआ कि वह लड़की बीरबल की है तो उन्होंने प्यार से उसे अपने पास बुलाया और उससे बात करने लगे। लड़की शहंशाह से बहुत शीघ्र ही हिल-मिल गई। तभी अचानक ही बादशाह ने कहा, ''हमारी बेटी को बात करना भी आता है?'' जवाब में बीरबल की बेटी बोली, ''न कम न अधिक।''

बादशाह लड़की का मुंह ताकने लगे। उन्हें उसकी बात समझ में नहीं आई थी। वह बोले, ''तुम कहना क्या चाहती हो?''

बीरबल की बेटी ने कहा, ''मैं यह कहना चाहती हूं कि बड़ों से कम बोलना चाहिए और छोटों से ज्यादा।''

बादशाह सलामत लड़की की बुद्धिमत्तापूर्ण बात सुनकर खुशी के मारे गदगद हो गए। ●

दुष्ट के साथ दुष्टता

एक धनवान कंजूस व्यक्ति की तारीफ में एक कवि कविता लिखकर उससे मिला और कवि ने अपनी कविता बड़ी शान से पढ़कर उसे सुनाई।

वह कंजूस समझ गया कि यह कवि उससे कुछ लेने के लिए ही यहां आया है। प्रशंसा में कविता पढ़ना तो एक बहाना है। कंजूस ने सोचा कि क्यों न मैं भी इसे अपनी बातों से खुश करके यहां से जाने पर मजबूर कर दूं। यह सोचते हुए वह कंजूस बोला, ''बहुत खूब कवि महोदय, आपने मेरी तारीफ में बहुत अच्छी कविता लिखी है। कल आप आइए, मैं आपकी मुराद अवश्य पूरी करूंगा।''

कवि वापस चला गया। कंजूस बहुत ही खुश हुआ कि चलो बला टली। कुछ देना न पड़ा और बात भी बन गई। दूसरे दिन कवि कुछ धन पाने के लालच में कंजूस से मिलने आया। कवि पर नजर पड़ते ही कंजूस बोला, ''तुम कौन हो, भाई? किससे मिलना है?'' यह कहकर कंजूस ने ऐसा नाटक किया जैसे उसने कवि को कभी देखा ही न हो।

कवि आश्चर्य से चौंकते हुए बोला, ''महोदय, आप यह क्या कह रहे हैं। कल ही तो मैं आपसे मिला था और आपकी तारीफ में खूबसूरत-सी कविता भी लिखकर सुनाई थी। आप इतने कम समय में ही मुझे भूल गए?'' कंजूस बोला, ''कल की बात आज करने से कोई लाभ नहीं। जैसे कल तुमने मुझे कविता सुनाई वैसे ही मैंने भी

अपनी मीठी-मीठी बातें तुम्हें सुना दी थीं। न तो तुमने मुझे कुछ दिया और न मैंने तुम्हें कुछ दिया। हिसाब बराबर हो गया। अब तुम मेरा पीछा छोड़ो।'

कंजूस के इतना कहने पर वह कवि वहां से सीधे घर आया और अपने एक दोस्त के साथ बीरबल से मिला और अब तक जो हुआ था, वह सब बीरबल को बता दिया। बीरबल बोले, ''कवि महोदय, आप एक हफ्ते के बाद अपने इस दोस्त को उस कंजूस के यहां भेजना। जब आपका दोस्त कामकाज के बहाने उससे मित्रता कर ले तब किसी दिन उसे घर पर आने का निमंत्रण देना। उस दिन मुझे भी बुला लेना लेकिन इतना अवश्य ध्यान रहे कि उसे केवल न्योता देना है, खाना नहीं खिलाना है।''

बीरबल यह कहकर दरबार के कामकाज में तल्लीन हो गए। कवि का मित्र कुछ ही रोज में कंजूस से काफी घुल-मिल गया। जब मित्रता गाढ़ी हो गई तब एक दिन कंजूस को उस व्यक्ति ने खाने का निमंत्रण दिया। कंजूस ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। बीरबल और कवि को भी इसकी खबर कर दी। कवि वेश बदलकर दोस्त के घर आ पहुंचे। बीरबल भी वेश बदलकर आ गए। थोड़ी देर बाद कंजूस भी आ गया। उन तीनों ने ही कंजूस की बड़ी आवभगत की और कंजूस से तरह-तरह की मीठी बातें करने लगे।

कंजूस भूखा था, क्योंकि वह घर से खाकर नहीं चला था और दावत के नाम पर सुबह से ही कुछ खाया नहीं था। जब उसे भूख कुछ अधिक ही सताने लगी तो परेशान होकर कंजूस बोला, ''अरे भाई, खाने-पीने का भी इंतजाम है या ऐसे ही बैठे रहना है?'' कवि के मित्र ने कहा, ''मित्र, मैंने तुम्हें भोजन के लिए नहीं बुलाया है। मैंने तो तुम्हें केवल भोजन का निमंत्रण देकर प्रसन्न किया है।''

यह सुनते ही कंजूस ने उन तीनों को ध्यान से देखा, फिर कवि को तुरंत ही पहचान लिया। कंजूस ने अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी और कवि को वाजिब इनाम दिया तथा इस घटना से अच्छी सीख ली।

एक कागज ऊंची चारपाई

बीरबल महीनों से बीमार थे। दरबार में वह नहीं आ रहे थे। शहंशाह अकबर से जब बीरबल को देखे बिना नहीं रहा गया तो वह दो सैनिकों के साथ उनके घर पर पहुंच गए। अकबर को अपने घर पर देखकर बीरबल का बीमार चेहरा खिल गया। अकबर ने उनसे उनके स्वास्थ्य के बारे में जैसे ही पूछा बीरबल उठकर शौचालय की ओर दौड़ पड़े। बीरबल के जाते ही अकबर के मन में विचार आया कि क्यों न बीरबल के बुद्धि बल की परीक्षा ली जाए। देखें बीमारी की हालत में बीरबल का दिमाग उतना ही चलता है या कुछ बदलाव आ गया है। यह विचार आते ही शहंशाह ने अपने सैनिकों से कहा– 'बीरबल की चारपाई के चारों पायों के नीचे कागज के चार टुकड़े रख दो।'

सैनिकों ने अगले पल ही शहंशाह के हुक्म का पालन किया और कुछ दूरी पर जाकर चुपचाप खड़े हो गए। इतने में बीरबल शौचालय से आ गए और चारपाई पर लेट गए। लेकिन वह अगले पल ही सिर उठाकर चारपाई के चारों तरफ देखने लगे। बादशाह अकबर ने उनको अपनी बातों में उलझाकर रखने की बहुत कोशिश की। लेकिन बीरबल का ध्यान इधर-उधर भटक ही जाता। बादशाह ने बीरबल के मन की चंचलता को देखकर पूछ ही लिया, ''क्या बात है बीरबल, तुम्हारा ध्यान हमारी बातों में नहीं लग रहा है?''

बीरबल बोले, ''हुजूर, मुझे जाने क्यों ऐसा जान पड़ता है जैसे कमरे में कुछ बदलाव किया गया है।''

''यह केवल तुम्हारा भ्रम है, बीरबल। कमरे में कहीं कोई बदलाव नहीं हुआ है। जैसा पहले था वैसा ही अभी भी है।'' बादशाह यह कहकर शांत हो गए।

''नहीं जहांपनाह! या तो मेरे घर की दीवारें कागजभर जमीन के नीचे चली गई हैं या मेरी चारपाई एक कागज की मोटाई जितनी ऊंची हो गई है।'' बीरबल की बातें सुनकर शहंशाह अकबर बोले, ''बीरबल, तुम बीमार हो और ऐसे में दिमाग में कुछ न कुछ ऊल जलूल विचार आ ही जाते हैं।''

शहंशाह ने बीरबल को भ्रमित करना चाहा लेकिन चतुर बीरबल सब समझ गए और बोले, ''हुजूर, यह मेरे मन का भ्रम नहीं है। मैं बीमार हूं लेकिन मेरी बुद्धि बीमार नहीं है।'' शहंशाह बीरबल को दिमागी रूप से स्वस्थ देखकर बहुत ही

खुश हुए और बोले, "बीरबल, हम तुम्हारी बीमारी को लेकर बहुत ही चिंतित थे। लेकिन तुम्हें और तुम्हारी बुद्धि को देखकर अब मेरी चिंता दूर हो गई"

फिर बादशाह ने हंसते-हंसते यह बता दिया कि हां, तुम्हारी चारपाई एक कागज ऊंची हो गई है, क्योंकि तुम्हारी बुद्धि को जांचने के लिए हमने पायों के नीचे कागज के टुकड़े रखवा दिए हैं। यह कहकर शहंशाह ने उनके जल्दी स्वस्थ होने की ईश्वर से प्रार्थना की फिर अपने महल को लौट गए। ●

बुजुर्गों से मिला ज्ञान

बादशाह अकबर के मन में हमेशा कोई न कोई सवाल उठता ही रहता था। एक दिन बादशाह सलामत ने बीरबल से कहा, "बीरबल, दरबार में एक ऐसे आदमी को ढूंढ़ कर ले आओ, जो बहुत ही बुद्धिमान हो।"

बीरबल कुछ देर शांत रहे, फिर बोले, "जहांपनाह, मैं जल्दी ही ऐसा आदमी ढूंढ़कर दरबार में ले आऊंगा। लेकिन इसके लिए समय और धन की आवश्यकता पड़ेगी।"

बादशाह अकबर बोले, "बीरबल, सोने की 300 मोहरें और एक हफ्ते का समय हम तुम्हें देते हैं।"

धन और एक हफ्ते का अवकाश लेकर बीरबल अपने घर चले गए। सारा धन उन्होंने दीन-दुखियों में बांट दिया। सप्ताह के अंतिम दिन बीरबल ने एक चरवाहे को पकड़ा और उसे स्नान करवाकर अच्छे कपड़े पहनाए तथा सोने की सौ मोहरें उसे देकर दरबार में ले आए। रास्ते में ही चरवाहे को बता दिया कि उसे बादशाह सलामत के सामने कैसा व्यवहार करना है।

बादशाह अकबर के दरबार में पधारते ही बीरबल ने कहा, "जहांपनाह, मैं बुद्धिमानों का बुद्धिमान व्यक्ति ढूंढ़कर लाया हूं।"

शहंशाह ने चरवाहे को देखते हुए पूछा, "तुम्हारे माता-पिता तुम्हें क्या कहकर बुलाते हैं? तुम कहां के रहने वाले हो। तुम कौन-सी खास बात जानते हो?" एक साथ इतने सवाल बादशाह अकबर ने कर दिए। लेकिन चरवाहे ने किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया, क्योंकि बीरबल ने उसे पहले से ही चुप रहने के लिए कहा था।

बादशाह ने शिकायत भरे लहजे में बीरबल से कहा, "बीरबल, यह कहीं गूंगा और बहरा तो नहीं है? इसने तो हमारे किसी भी सवाल का जवाब नहीं दिया। भला यह बुद्धिमानों का बुद्धिमान कैसे हो सकता है?" बीरबल ने शीश नवा कर कहा, "हुजूर, यह इसकी बुद्धिमानी है। इसने अपने बड़े-बूढ़ों से सीख रखा है कि राजा और स्वयं से अधिक समझदार व्यक्ति के सामने चुप रहने में ही भलाई है। यह उनसे मिले ज्ञान का अनुसरण कर रहा है।"

बादशाह अकबर बीरबल के इस तर्क के आगे अब क्या बोलते। वे मुस्कराकर ही रह गए और चरवाहे को इनाम देकर सम्मान के साथ दरबार से विदा किया। ●

आपसे बड़ा नहीं हो सकता

बीरबल को जुकाम हो गया था। वह दरबार में आना नहीं चाहते थे लेकिन शहंशाह अकबर का काम उनके बिना नहीं चलता था। वह बादशाह के सामने बैठकर किसी मसले पर गुफ्तगू कर रहे थे, तभी अचानक बीरबल को छींक आ गई। सामने बैठे बादशाह के मुख से अचानक ही निकल गया, "बीरबल, तुम वास्तव में ही बड़े मूर्ख हो।"

बीरबल ने छींक रोकने की पूरी कोशिश की थी, पर छींक आ ही गई थी। बीरबल भी अपनी इस बेतुकी और बेसमय की छींक पर शर्मिंदा थे। लेकिन खामोश रहना बीरबल जैसे हाजिरजवाब व्यक्ति के स्वभाव में शामिल नहीं था। कुछ समय तक चुप रहने के बाद बीरबल बोले, "जी जहांपनाह, लेकिन आपसे बड़ा तो मैं कभी हो ही नहीं सकता।"

शहंशाह यह सुनकर हंसने लगे और कहने लगे, "बीरबल, तुमसे तो कोई जीत ही नहीं सकता।" ●

बीरबल की खिचड़ी

शहंशाह अकबर हमेशा कुछ नया करने में विश्वास करते थे और इसके लिए धन भी खर्च करने में पीछे नहीं हटते थे। एक बार शहंशाह ने दरबार में घोषणा की, "जो व्यक्ति महल से बह रही

नदी में पूरी रात खड़ा रहेगा, उसे हम ढेर सारे धन से पुरस्कृत करेंगे।''

जाड़े की ठंडी रात में नदी के ठंडे पानी में रातभर रहना सबके वश की बात नहीं थी। एक गरीब धोबी के कानों तक जब शहंशाह की घोषणा पहुंची तो उसके कान खड़े हो गए। उसने सोचा कि घोर निर्धनता में मर-मरकर जीने से तो अच्छा है कि मैं शाही घोषणा का पालन करते हुए पूरी रात नदी में गुजार दूं। जिंदा रहा तो गरीबी से मुक्ति मिल जाएगी और मर गया तो भी इस नरक की जिंदगी से छुटकारा मिल जाएगा। यह सोचकर गरीब धोबी ने सारी रात नदी में खड़े रहकर ही गुजार दी।

दूसरे दिन वह दरबार में पहुंचा और शहंशाह से कहा, ''जहांपनाह, मैंने नदी में पूरी रात गुजार दी है। अब मुझे शाही खजाने से इनाम दिया जाए।''

बादशाह अकबर ने उसे देखते हुए पूछा, ''तुम्हारे पास इस बात का क्या सबूत है कि तुम सारी रात नदी में खड़े रहे?''

सीधा-सादा धोबी बोला, ''जहांपनाह, मैं पूरी रात राजमहल की छत पर जल रहे दीपक की लौ को देखता रहा।''

शहंशाह मुस्कराते हुए बोले, ''अच्छा, अब समझ में आया, महल के चिराग की रोशनी की गरमी के कारण तुम पूरी रात पानी में आराम से खड़े रहे। अत: तुम इनाम के असली हकदार नहीं हो सकते।'

बादशाह के इतना कहते ही धोबी का चेहरा लटक गया। गरीब और कमजोर धोबी शहंशाह से जुबान भी तो नहीं लड़ा सकता था। वह दरबार से बाहर आया और बीरबल के समीप पहुंचकर बोला, ''हुजूर, आप तो गरीबों के दोस्त हैं। मेरा ईश्वर जानता है मैंने सारी रात नदी के पानी में गुजारी है लेकिन बादशाह ने मुझे इनाम देने से इंकार कर दिया।''

बीरबल ने पूछा, ''इसका कारण क्या है?'' धोबी ने बताया, ''शहंशाह कहते हैं कि तुमने राजमहल के चिराग की लौ की गरमी के कारण नदी में खड़े रहकर रात गुजारी है। भला तुम इनाम के हकदार कैसे बन सकते हो।''

बीरबल को यह जानकर बड़ी ही हैरानी हुई और उन्होंने धोबी को ढाढ़स बंधाते हुए कहा, ''तुम धैर्य रखो। मैं तुम्हें इनाम दिलवाऊंगा।'' धोबी भारी कदमों से घर को लौट गया। दूसरे दिन बीरबल जब दरबार में समय से नहीं पहुंचे तब शहंशाह ने एक नौकर को उन्हें बुलाने के लिए भेजा। नौकर बीरबल के पास से लौटकर आया तो शहंशाह ने उससे पूछा, ''क्या हुआ, बीरबल नहीं मिले?''

नौकर ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, ''हुजूर, बीरबल ने कहलवाया है कि वे तब तक नहीं आ सकते जब तक उनकी खिचड़ी पूरी तरह से पक नहीं जाती।'' यह सुनकर शहंशाह को बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि बीरबल दरबार का काम छोड़कर आज खिचड़ी क्यों पका रहे हैं?

जब बीरबल बहुत इंतजार करने के बाद भी दरबार में नहीं आए तब शहंशाह कुछ दरबारियों के साथ स्वयं बीरबल के घर की ओर बढ़ गए। बीरबल के घर पहुंचकर उन्होंने देखा कि एक बहुत लंबे बांस के शीर्ष पर एक हांड़ी लटकी हुई है और बीरबल उसके नीचे आग जला रहे हैं। शहंशाह को बड़ी ही हैरानी हुई कि कहां हांड़ी है और कहां आग जल रही है। ऐसे तो पूरी उमर बीत जाने के बाद भी खिचड़ी नहीं पकेगी। शहंशाह यह सोचते हुए बीरबल से बोले, ''बीरबल, यह क्या मूर्खता है? हांड़ी ऊपर बांस में लटक रही है और तुम यहां जमीन पर आग जला रहे हो, तुम्हारी खिचड़ी भला कभी पक सकेगी?''

''क्यों नहीं पकेगी, जहांपनाह!'' बीरबल ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा।

''लेकिन कैसे बीरबल? आंच तो हांड़ी तक पहुंच ही नहीं रही है।'' बादशाह ने आश्चर्य से कहा।

''पहुंच रही है हुजूर बिल्कुल वैसे ही, जैसे महल के ऊपर जल रहे दीपक की रोशनी की गरमी पाकर धोबी सारी रात नदी के पानी में खड़ा रह गया था।'' बीरबल ने अवसर का लाभ उठाते हुए अपनी बात कह दी।

बीरबल के यह कहते ही बादशाह शर्मसार हो गए और उन्होंने धोबी को दरबार में बुलाकर शाही खजाने में से धन देने का हुक्म जारी कर दिया। ●

दो माह का एक माह

शहंशाह अकबर के दिमाग में भी बैठे-बैठे असंभव को संभव बनाने के विचार उठते ही रहा करते थे। बीरबल उनके इस काम में मदद करते रहते थे। एक दिन अकबर ने बहुत सोचने के बाद फैसला लिया कि दो महीनों को एक महीना बनाया जाए।

अपने फैसले को बहुत तोलने के बाद शहंशाह ने बीरबल को अपने इस फैसले से अवगत कराया।

बीरबल यह सुनकर हैरान रह गए, फिर शहंशाह की प्रशंसा करते हुए कहा, ''जहांपनाह, इस तरह से इस दुनिया का तो आप भला ही करेंगे, क्योंकि चांदनी रात 15 दिन के बदले 30 दिन की होगी?''

शहंशाह अकबर बीरबल के इस तर्क पर और स्वयं को कुदरत के सामने मजबूर पाकर शर्मिंदा हो गए।

शहंशाह बोले, ''बीरबल, हम दो माह को एक बना सकते हैं, पर कुदरत के नियमों को नहीं बदल सकते। यह तो सोचा ही नहीं। तुम महान हो, बीरबल। तुमने मुझे गलत फैसला लेने से पहले ही सचेत कर दिया।'' यह कहते हुए बादशाह ने बीरबल को गले से लगा लिया।

मैं नौकर आपका हूं, बैंगन का नहीं

बादशाह अकबर और बीरबल शाही बाग में बैठे बैंगन की सब्जी पर बात कर रहे थे। शहंशाह बैंगन की प्रशंसा कर रहे थे और बीरबल भी उनकी हां-में-हां मिलाते जा रहे थे तथा बीच-बीच में बैंगन के औषद्यीय गुणों को भी गिनाते जा रहे थे।

इसके दो महीने बाद शहंशाह ने एक दिन सोचा कि देखें बीरबल की बैंगन के बारे में अब क्या राय है। बीरबल संयोग से उसी समय अकबर से मिलने आ गए। अकबर बादशाह ने उन्हें सादर बैठाया और बैंगन की बुराई करने लगे। बीरबल भी शहंशाह की हां-में-हां मिलाने लगे और साथ ही यह भी कहने लगे कि हुजूर, क्या बताएं, बैंगन की सब्जी इतनी खराब है कि इसको खाने से बादी हो जाती है।

बादशाह बीरबल के मुंह से बैंगन की बुराई सुनकर हैरान रह गए और कहने लगे, ''बीरबल, तुम्हारी इस बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता। हमने उस दिन बैंगन की प्रशंसा की तो तुमने भी प्रशंसा की और आज हमने बैंगन की बुराई की तो तुमने भी बुराई करनी शुरू कर दी। आखिर तुम्हारी अपनी कोई व्यक्तिगत राय बैंगन के बारे में क्यों नहीं है? बीरबल, यह सब क्यों?'''

बीरबल बोले, ''जहांपनाह, मैं आपका सेवक हूं, बैंगन का नहीं।'' यह सुनकर शहंशाह की आंखें खुशी के मारे भर आईं। उन्होंने बीरबल को गले से लगा लिया।

अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा

बादशाह अकबर के दिमाग में तरह-तरह की बातें आती रहती थीं। दरबार में वह बैठे हुए थे और दरबारियों से बातें करने में मशगूल थे। तभी अचानक उन्होंने दरबारियों से सवाल कर दिया, ''खुदा न करे अगर सबकी दाढ़ी में आग लग जाए और उसमें मैं भी शामिल होऊं तो आप सब सबसे पहले किसकी दाढ़ी की आग बुझाना चाहेंगे?''

दरबारियों में कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया, फिर अधिकांश दरबारियों ने समवेत स्वर में कहा, ''जहांपनाह की दाढ़ी की।'' शहंशाह को दरबारियों की बात पर यकीन नहीं

हुआ। उन्होंने बीरबल की ओर देखा। वह खामोश बैठे हुए थे। शहंशाह ने बीरबल से पूछा, "बताओ बीरबल, किसकी दाढ़ी की आग पहले बुझाओगे?"

बीरबल बोले, "जहांपनाह, सच्चाई तो यही है कि मैं पहले अपनी दाढ़ी की आग बुझाऊंगा, फिर दूसरे की दाढ़ी के बारे में सोचूंगा।" बीरबल ने आत्मविश्वास से कहा।

बादशाह अकबर ने बीरबल को गर्व से देखा और कहा, "बीरबल तुम एक हाजिरजवाब ही नहीं, बल्कि एक सच्चे व्यक्ति भी हो। बाकी लोग मुझे खुश करने के लिए झूठ बोल रहे थे, जबकि हर व्यक्ति पहले अपने बारे में ही सोचता है। हम तुम्हारे इस जवाब से बहुत खुश है, बीरबल।" यह कहकर शहंशाह चुप हो गए। वह बीरबल की स्पष्टवादिता से बहुत ही खुश थे।

नदी पति के घर जा रही है

वर्षा ऋतु थी। यमुना नदी में बाढ़ आई थी। लहरें किनारे पर आकर टकरा रही थीं, जिससे अजीब सी 'छप-छप' की आवाज होती थी। शहंशाह अकबर का महल यमुना तट पर ही था। बादशाह गहरी नींद में सोए हुए थे। रात का सन्नाटा चारों तरफ फैला पड़ा था। छप-छप की आवाज जब बादशाह के कानों में पड़ी तो वह जाग गए और छप-छप की आवाज सुनने लगे। फिर इसके बाद बादशाह को नींद नहीं आई तो वह कमरे में ही उठकर टहलने लगे। टहलते-टहलते वह खिड़की के पास आ गए और पानी से लबालब भरी यमुना नदी को अपलक देखने लगे। लहरों की छप-छपाहट अभी भी उनके कानों में गूंज रही थी।

तभी उन्हें ऐसा जान पड़ा जैसे नदी रो रही हो। शहंशाह के मन में सवाल उठ खड़ा हुआ कि आखिर क्या बात है। रात के सन्नाटे में सब सो रहे हैं मगर नदी क्यों रो रही है? अपने इस प्रश्न का जवाब वह नहीं ढूंढ़ सके तो बिस्तर पर आकर चुपचाप लेट गए। दूसरे दिन शहंशाह दरबार में आए तो सभी दरबारियों से यही प्रश्न किया कि नदी रोती क्यों है?

बारी-बारी से सभी दरबारियों ने अपनी समझ के अनुसार जवाब दिया लेकिन किसी के भी जवाब से बादशाह को संतुष्टि नहीं मिली। इसी बीच बीरबल दरबार में पधारे। बादशाह ने बीरबल को देखते ही सवाल कर दिया, "बताओ बीरबल, नदी क्यों रोती है?"

बीरबल इस बेतुके सवाल पर कुछ देर तक हतप्रभ खड़े रहे फिर उन्होंने कहा, "जहांपनाह, मैं आपके सवाल का जवाब तभी दे सकता हूं जब मैं नदी का रोना अपने कानों से सुनूंगा।"

"बीरबल, नदी के रोने की आवाज तो मैं तुम्हें रात के सन्नाटे में ही सुना सकता हूं।" बादशाह ने यह कहकर बीरबल को देखा।

बीरबल रात होने पर शहंशाह के महल में पहुंचे। बादशाह उन्हें अपने महल की खिड़की के पास ले गए और वह 'छप-छप' की आवाज उन्हें सुनाई और इसका कारण पूछा।

बीरबल अगले पल ही यह समझ गए कि यह तो पानी के बहने की आवाज है और बादशाह ने इसे ही नदी का रोना मान लिया है। बीरबल झुककर बड़े ही विनम्र स्वर में बोले, "हुजूर, नदी अपने पिता के घर यानी पहाड़ से विदा होकर अपने पति यानी समुद्र के यहां जा रही है, जिससे वह पिता से अलग होने के गम में रोती जा रही है।' बीरबल का जवाब इतना सटीक और हकीकत भरा था कि बादशाह अकबर खुशी के मारे गद्‌गद हो गए और कहा, "बीरबल, तुम्हारे पास तो हर सवाल का जवाब होता है। हम तुम्हारे जवाब से संतुष्ट हुए।"

बादशाह के अनमोल सवाल

आज दरबार समय से पहले ही लग गया था। बादशाह अकबर समय से पहले ही दरबार में आकर बैठ गए थे। शहंशाह अकबर की यह खासियत थी, जब वह फुर्सत में होते थे, तब तरह-तरह के विचार उनके मन में उत्पन्न हो जाया करते थे और फिर वह दरबारियों से उनका समाधान पूछते थे।

बीरबल आज दरबार में नहीं थे। शहंशाह ने दरबारियों से पूछा, "दूध किसका अच्छा, फूल

किसका अच्छा, पत्ता किसका अच्छा, राजा कौन अच्छा और मिठाई किसकी अच्छी?''

शहंशाह के सवाल सुनते ही दरबारी आपस में फुसफुसाने लगे। किसी दरबारी ने गाय के दूध को अच्छा बताया तो किसी दरबारी ने भैंस का और किसी ने बकरी का दूध अच्छा बताया। इसी तरह से किसी दरबारी ने गुलाब का फूल अच्छा बताया तो किसी दरबारी ने कमल का। किसी दरबारी ने केले के पत्ते को अच्छा बताया तो किसी दरबारी ने नीम के पत्ते को अच्छा बताया। किसी दरबारी ने राजा कौन अच्छा के जवाब में शहंशाह को अच्छा बताया और अंतिम सवाल के जवाब में किसी दरबारी ने गन्ना को अच्छा बताया तो किसी दरबारी ने अंगूर को और किसी दरबारी ने मिष्ठान को अच्छा बताया, लेकिन बादशाह अकबर उनके जवाब से संतुष्ट नहीं हुए।

तभी दरबार में बीरबल आ गए। बादशाह के चेहरे पर उनको देखते ही चमक आ गई और बीरबल के बैठने से पहले ही शहंशाह ने उपरोक्त पांचों सवालों के जवाब पूछे।

बीरबल कुछ पल तक शांत रहे, फिर बोले, ''जहांपनाह, मां का दूध सबसे अच्छा और हितकारी होता है। कपास का फल सबसे अच्छा होता है, क्योंकि इससे सबके शरीर ढक जाते हैं। पान का पत्ता सबसे अच्छा होता है, क्योंकि इसे खाकर दुश्मन भी दोस्त बन जाते हैं। राजाओं में इन्द्र सबसे अच्छे हैं, क्योंकि उनके आदेश से बारिश होती है और बारिश से धन-धान्य में वृद्धि होती है और पूरे प्राणियों की क्षुधा तृप्त होती है। मिठास वाणी की सबसे अच्छी होती है, क्योंकि जिसकी वाणी में मिठास होती है, वह सारे जगत को अपने वश में कर लेता है।'' शहंशाह ने सिंहासन से उठकर बीरबल को गले से लगा लिया और कहा, ''बीरबल, तुमने अपने जवाब से मुझे तृप्त कर दिया।''

नीचे की मंजिल

बादशाह अकबर को आकर एक दरबारी ने बताया कि बीरबल अपनी बांदियों और दासियों का ध्यान जरूरत से अधिक रखते हैं, जब देखो उनकी बड़ाई करते रहते हैं।

दरबारी की इस बात को सुनकर शहंशाह के मन में विचार आया कि क्यों न हम चलकर स्वयं इस बात की तहकीकात करें कि आखिर मामला क्या है? इसके दूसरे दिन बादशाह अकबर अचानक ही बीरबल के घर पहुंच गए और सीढ़ियां चढ़ते हुए ऊपरी मंजिल पर पहुंच गए।

बादशाह सलामत को सहसा बीरबल के यहां देखकर एक दासी दौड़ी-दौड़ी आई। बादशाह सलामत दासी को देखकर हल्का-सा मुस्कराए, फिर बोले, ''तुम्हारी ऊपर की मंजिल तो बहुत सजी हुई है, सुन्दर और हसीन भी है लेकिन जरा नीचे की भी तो देखूं कैसी है?''

दासी बीरबल का नमक खाती थी। बीरबल के नमक का कुछ तो असर उस पर था ही। वह अगले पल ही मुस्कराकर बोली, ''अवश्य देखें, हुजूर! आप उसी रास्ते से तो होते हुए आए हैं, फिर भी आपको मालूम नहीं हुआ कि नीचे की मंजिल कैसी है?' सवाल के बदले सवाल, शहंशाह भोंचक्के रह गए। दासी का तीखा, पर सटीक जवाब शहंशाह ने सुना तो उन्हें यह समझने में देर न लगी कि बीरबल की दासियां सचमुच ही तारीफ के काबिल हैं। बीरबल यूंही उनकी तारीफ करते नहीं फिरते हैं। शहंशाह चुपचाप महल को लौट गए।

सबसे ज्यादा सफेद कौन

दरबार में बैठे दरबारियों से बादशाह अकबर ने सवाल कर दिया, ''किसी को मालूम है सबसे अधिक सफेद कौन है?''

दरबारी आश्चर्य से एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। एक दरबारी बहुत सोचने और बहुत सिर मारने के बाद बोला, ''बर्फ, जहांपनाह।''

दूसरे दरबारी ने कहा, ''हुजूर, कपास।''

तीसरे दरबारी ने कहा, ''जहांपनाह, दूध।''

सबने अपनी-अपनी सोच व बुद्धि के अनुसार सफेद वस्तुओं के नाम बताए।

अधिकांश दरबारियों ने कपास और दूध को ही सबसे अधिक सफेद माना। बादशाह अकबर भी इससे काफी कुछ हद तक सहमत थे।

लेकिन बीरबल सबसे अलग-थलग थे और अभी तक समझ नहीं सके थे कि सबसे अधिक सफेद चीज क्या हो सकती है?

बीरबल अपनी चुप्पी तोड़ते हुए बोले, ''जहांपनाह, मेरी नजर में तो सूर्य का प्रकाश सबसे अधिक सफेद और चमकीला होता है। वह घोर अंधकार में भी साफ दिख जाता है।''

उन्होंने बीरबल से कहा, ''बीरबल, क्या तुम अपनी बात को साबित कर सकते हो?''

'''हां, मेरे मालिक, लेकिन मुझे अपनी बात को साबित करने के लिए 24 घंटे का समय चाहिए।'' बीरबल के यह कहने पर शहंशाह ने उन्हें 24 घंटे का समय दे दिया।

दूसरे दिन दोपहर में बादशाह अकबर आराम फरमा रहे थे। बीरबल एक बर्तन में दूध और पांच-छह कपास के खिले हुए फूल कमरे के दरवाजे पर रख आए। कमरा चारों तरफ से बंद था और सूरज की रोशनी के अंदर जाने के लिए कोई भी खुली जगह नहीं थी। बीरबल ने यह काम छुपकर गुप्त तरीके से किया था।

आराम करने के बाद शहंशाह जैसे ही उठकर दरवाजे के पास आए, उनके पैर की ठोकर लगते ही दूध का बर्तन उलट गया और सारा दूध फर्श पर फैल गया। दरवाजा खुलते ही सूरज के प्रकाश से कमरा भर गया और शहंशाह अकबर को दरवाजे के पास कपास के फूल और एक बर्तन देखकर बहुत ही आश्चर्य हुआ। वह कमरे के बाहर आ गए। बीरबल कुछ दूरी पर नजर आ गए। शहंशाह समझ गए कि इन सबके पीछे बीरबल का हाथ है।

बादशाह आगे बढ़ते हुए बोले, ''बीरबल, यह सब करने के पीछे तुम्हारा मकसद क्या है?'' बीरबल ने सिर झुकाकर कहा– 'हुजूर आप भूल गए। कल आपने ही तो कहा था कि अपनी बात साबित करके दिखाओ। आज मैंने आपके उसी आदेश का पालन किया है। हुजूर, मैंने अपनी बात को साबित कर दिया है। जहांपनाह, अब तो आप समझ ही गए होंगे कि इन तीनों में से सबसे अधिक सफेद और चमकीला कौन है? दूध और कपास को मैंने यहां इसलिए रखा कि उनकी सफेदी पर किसी को भी शक नहीं है। फिर भी आपने इन्हें नहीं देखा। जहांपनाह, अब तो आपको यह मानना ही होगा कि सूरज का प्रकाश ही सबसे अधिक सफेद, उज्ज्वल और चमकीला है, क्योंकि आपने जैसे ही दरवाजा खोला सूरज का प्रकाश अंदर फैल गया और आपको सब चीजें नजर आने लगीं।''

बादशाह अकबर यह सुनकर और देखकर मुस्कराए, फिर दरबार में आकर सबको बताया कि बीरबल का ही जवाब सही है। सबसे अधिक सफेद और चमकीला सूर्य का प्रकाश ही है। फिर तो दरबारियों ने भी बीरबल की प्रशंसा की और बादशाह ने बीरबल को मोतियों की एक माला भेंट करके उन्हें सम्मानित किया।

कितने दिन जीना है

बीरबल अकबर बादशाह की हर समस्या के जवाब थे। बादशाह आए दिन उनकी बुद्धि की परीक्षा लेते ही रहते थे ताकि बीरबल अपनी बुद्धि और समझ में अधिक से अधिक विकास कर सकें। बादशाह ने एक दिन एक साधु को बीरबल के पास उनके बुद्धि -बल की परीक्षा लेने के लिए भेजा। अकबर बादशाह भी वेश बदलकर पास में ही एक जगह छुप गए। साधु से बीरबल के नजदीक आकर कहा, ''वत्स, तुम बीरबल हो न? भगवान ने सपने में मुझसे कहा है कि मैं अपने जीवन भर के लिए धन तुमसे ले लूं।''

बीरबल साधु के ऐसा कहने पर आश्चर्य में पड़ गए और अगले ही पल समझ गए कि यह कोई ढोंगी साधु है, जो मुझे ठगना चाहता है। बीरबल बोले, ''अच्छी बात है भगवन, मैं आज रात भगवान से सपने में यह पूछ लेता हूं कि अब आपने और कितने दिन जीना है, तभी तो मैं तुम्हें उचित धन दे सकूंगा।''

साधु बीरबल का चतुरतापूर्ण जवाब सुनकर दंग रह गया। उसके पास अब कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं

था। पास में ही छुपे अकबर बादशाह भी बीरबल का जवाब सुन चुके थे। वह हंसते हुए बीरबल के नजदीक आ गए।

बीरबल समझ गए कि यह सब बादशाह सलामत का ही किया धरा था। बादशाह अकबर बीरबल की पीठ पर हाथ रखते हुए कहने लगे, ''बीरबल, तुम्हारी समझ और बुद्धि का कोई जवाब नहीं। चलो अब हम दरबार में चलते हैं।''

बीरबल अकबर के साथ दरबार की ओर बढ़ चले।

बेरहम मां

दरबार लगा हुआ था। शहंशाह दरबारियों से राज्य के हालात पर बातचीत कर रहे थे। इतने में एक औरत हवा के झोंके की तरह चीखती-चिल्लाती हुई दरबार में आ गई। शहंशाह अकबर सहित दरबारी भी चौंक गए। एक दरबारी ने उस औरत को देखते हुए पूछा, ''क्या परेशानी है? तुम बदहवास-सी इतना दु:खी होकर क्यों रो रही हो?''

वह औरत बोली, ''मेरी पड़ोसिन ने मेरे बेटे का कत्ल कर दिया है।' बादशाह अकबर ने सैनिकों को हुक्म दिया कि उस पड़ोसिन को पकड़कर फौरन दरबार में हाजिर किया जाए।' सैनिकों ने पड़ोसिन को दरबार में लाकर हाजिर किया। शहंशाह ने पड़ोसिन को घूरते हुए पूछा, ''क्या तुमने इस औरत के बेटे का कत्ल किया है?''

पड़ोसिन यह सुनकर सहम ही नहीं गई, घबरा भी गई और बोली, ''मेरे माई-बाप, मैं अपराधी नहीं हूं। मैंने इस औरत के पुत्र को नहीं मारा है। अवश्य कोई मेरा शत्रु है, जिसने स्वयं इसके पुत्र की हत्या कर उसका शव मेरे बिस्तर पर रख दिया।'' शहंशाह ने बीरबल को हुक्म दिया कि वह अपनी सूझबूझ से इस मामले को सुलझाएं।

बीरबल कत्ल के इस मामले को सुलझाने के लिए उस जगह गए जहां इन दोनों औरतों के घर थे। बीरबल को आस-पास से मालूम हुआ कि जिस स्त्री के पुत्र की हत्या हुई है, वह अपनी पड़ोसिन से अक्सर ही लड़ती-झगड़ती रहती है, इसके साथ ही वह औरत बदमिजाज भी है। लेकिन पड़ोसिन बहुत ही सीधी-सादी और चरित्रवान औरत है। इसके साथ ही बहुत निर्धन भी है। बीरबल इस मामले की पूरी छानबीन करने के बाद दरबार में लौट आए और पड़ोसिन से बोले, ''देखो, तुमने बच्चे की हत्या नहीं की है तो तुम इस भरे दरबार में अपने सारे वस्त्र उतार दो।''

पड़ोसिन यह सुनकर घबरा गई और कहने लगी, ''बादशाहों के बादशाह, आप मेरी जान ले सकते हैं, पर मुझसे भरे दरबार में कपड़े उतारने को न कहें। मेरे पास बस मेरी इज्जत ही तो है।''

बीरबल ने अब उस औरत की ओर देखा, जिसके बच्चे का कत्ल हुआ था और आगे बढ़ते हुए बोले, ''देखो, अगर तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुम्हारे बच्चे का कत्ल पड़ोसिन ने ही किया है तो तुम भरे दरबार में निर्वस्त्र हो जाओ।'' उस औरत ने देखते-ही-देखते अपने बदन के सारे कपड़े उतारकर जमीन पर रख दिए। बीरबल अचानक ही मुस्करा पड़े और सैनिकों से कहा, ''इस निर्वस्त्र स्त्री को पेड़ से उलटा लटका दो और उसके नीचे लाल मिर्च रखकर आग लगा दो। वास्तव में ही यह औरत बहुत ही क्रूर, कठोर तथा दुश्चरित्र है। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि अपने पुत्र का कत्ल भी इस दुष्ट और चरित्रहीन औरत ने ही किया है।''

अकबर बादशाह का भी खून गुस्से से उबल पड़ा और गुर्राती आवाज में बोले, ''यह औरत निहायत ही घटिया, जालिम है और इंसानों की बस्ती में रहने लायक नहीं है। हमारा हुक्म है कि इसे उम्र भर के लिए काल कोठरी में डाल दिया जाए।''

बादशाह के फैसले से सभी बहुत ही प्रसन्न हुए शहंशाह ने बीरबल को शाबाशी दी और उनके इस बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य के लिए उनको ढेरों बधाइयां भी दीं।

विश्वासघाती काजी

फातिमा बीबी नाम की एक विधवा महिला ने अपने बाकी दिन गुजारने के विचार से मक्का-मदीना जाने का निर्णय लिया। उसकी कोई संतान नहीं थी। हज पर जाने से पहले फातिमा बीबी

ने अपने सारे गहने बेचकर सोने की मोहरें ले लीं। अपने खर्च के लिए कुछ मोहरें बाहर रखकर बाकी 800 मोहरें एक थैली में बंद कर उसके मुंह पर लाख की मोहर लगा दी। फिर वह अपने घर के ही पास में रहने वाले काजी के घर उस थैली को लेकर पहुंच गई। वह काजी अपनी ईमानदारी और रहमदिली के लिए ही मशहूर था।

फातिमा बीबी को अपने घर पर देखकर काजी बहुत खुश हुआ और उनसे पूछा, ''कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?'' फातिमा बीबी बोलीं, ''काजी साहब, आप जैसा ईमानदार, शरीफ और सत्यवादी इस पूरे शहर में कोई नहीं है। मैं चाहती हूं कि मेरी यह थैली आप रख लें ताकि मैं निश्चिंत होकर हज करने के लिए मक्का-मदीना जा सकूं। इस थैली में 800 स्वर्ण मोहरें हैं। अल्लाह के करम से यदि मैं सही-सलामत वापस आ गई तो मैं आपसे आकर इनको ले लूंगी और यदि मैं अल्लाह को प्यारी हो गई तो इस थैली के मालिक आप होंगे, फिर आपका जो मन करे इनका कर लेना।'

फातिमा बीबी के इतना कहने पर काजी बोला, ''बीबी साहिबा, आपका जो मन करे मेरे यहां निश्चिंत होकर रख सकती हैं। आपके लौटने तक मैं आपकी अमानत जान पर खेलकर भी सुरक्षित रखूंगा। आप आराम से हज करने के लिए जाइए।'' काजी ने फातिमा बीबी को दिलासा देते हुए कहा तो वह मन-ही-मन काफी प्रसन्न हो गईं।

फातिमा बीबी भी कोई साधारण महिला नहीं थीं। थैली की प्रत्येक मोहर पर उसने एक छोटा-सा निशान बना दिया था, जो बहुत ध्यान से देखने पर ही नजर आ सकता था। फातिमा बीबी को जब मक्का-मदीना गए पांच वर्ष हो गए तो काजी को यही लगा कि वह अब लौटकर नहीं आने वाली। वह निश्चित रूप से ही अल्लाह को प्यारी हो गई होगी। ऐसा सोचते ही काजी के मन में पाप जाग गया। उसकी नियत खराब हो गई। उसने मन-ही-मन यह फैसला कर लिया कि वह 800 मोहरें अब किसी को भी नहीं देगा। फातिमा बीबी अगर आ भी गईं तो उनको भी नहीं।

एक रोज फातिमा बीबी अचानक ही मक्का-मदीना से लौट आईं और वह सीधे काजी के पास अपनी थैली मांगने के लिए चली गईं। काजी ने उन्हें थैली वापस दे दी।

घर पहुंचकर फातिमा बीबी ने थैली का मुंह खोला तो आश्चर्य से उनकी आंखें फटी की फटी रह गईं। थैली में सोने की मोहरों की जगह उतनी ही संख्या में पैसे और रांगे के टुकड़े थे। फातिमा बीबी का चेहरा बुझ गया। वह खुली थैली को लेकर काजी के घर पहुंचीं और कहा, ''इसमें तो सोने की मोहरें नहीं हैं।''

काजी तेवर बदलते हुए बोला, ''एक तो नेकी करो ऊपर से बदनामी भी... देखो बीबी साहिबा, मैंने तो केवल थैली रखी थी, उसमें सोने की मोहरें हैं या रांगे की यह तो मैंने देखा भी नहीं था। तुम जैसी थैली दे गई थीं, वैसी ही मैंने रख ली थी। जैसी मोहर लगी थैली तुमने दी थी, वैसी ही मोहर लगी थैली मैंने लौटाई भी है। देखिए, आप मुझे बदनाम न करें।''

काजी की बातें सुनकर फातिमा बीबी को चक्कर से आ गए। वह गिड़गिड़ाते हुए बोलीं, ''काजी साहब, मुझ पर रहम करो। मैं एक नि:संतान बूढ़ी विधवा हूं। मेरे आगे-पीछे मुझे देखने वाला कोई नहीं है। मुझ बेसहारा औरत पर रहम करो। वे मोहरें ही मेरे बुढ़ापे का सहारा हैं। आप सारी मोहरें नहीं देना चाहते हैं तो आधी ही दे दीजिए। मैं तो आपको शहर का सबसे अधिक ईमानदार और रहमदिल इंसान समझकर अपनी थैली सौंप गई थी। आपने तो मुझ बेसहारा वृद्धा के साथ ऐसा विश्वासघात किया कि मैं कहीं की भी न रही।'' काजी काफी नाराज हो गया और आगे बढ़ते हुए धमकी भरे स्वर में बोला, ''देखो बीबी, तुम यहां से चुपचाप इज्जत के साथ चली जाओ, नहीं तो धक्के मारकर बाहर कर दूंगा।''

विधवा फातिमा बीबी आंसू बहाती हुई काजी के घर से बाहर आ गईं। अब उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें, क्या न करें, कहां जाएं और कहां न जाएं? फिर अचानक ही उनकी आंखों के सामने अकबर बादशाह का दरबार नाच गया। वह बदहवास-सी सीधे बादशाह अकबर के दरबार की ओर बढ़ गईं। दरबार में डरी-सहमी वह दाखिल हुईं और अपनी सारी आपबीती कह सुनाई।

बादशाह ने काजी को दरबार में बुलवाया और उससे पूछा, ''इस वृद्धा औरत की थैली के विषय में तुम्हें मालूम है?''

काजी हाथ जोड़कर कांपते स्वर में बोला, ''जहांपनाह, कोई पांच वर्ष पहले यह बुढ़िया मेरे यहां एक थैली छोड़ गई थी। जब यह वापस आई तो मैंने सहर्ष इसकी मोहर लगी थैली इसे वापस दे दी। हुजूर, मुझे नहीं मालूम उस थैली में सोने की मोहरें थीं या रांगे के टुकड़े।'' काजी ने बड़ी सफाई से जहांपनाह के सामने झूठ बोला। लेकिन शहंशाह अकबर को काजी की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। बादशाह ने काजी को घर जाने को कहा और फातिमा बीबी से कहा, ''तुम शाही दरबार में हो। तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें पूरा न्याय मिलेगा। तुम्हारी मोहरें कुछ दिनों में ही तुम्हें मिल जाएंगी।''

शहंशाह ने यह हुक्म देकर बीरबल को यह विवाद सौंप दिया। यह विवाद बीरबल के हाथ में आते ही उन्होंने फातिमा बीबी से थैली ले ली और उस थैली को अपने घर ले गए। बीरबल ने वैसी ही कुछ थैलियां मंगवाकर उनमें कुछ-न-कुछ भरकर लाख की मोहरें लगवा दीं। फिर उनमें सुराख कर दिए। तत्पश्चात शहर के सभी रफूगरों को एक-एक थैली दी और उनसे थैलियों के छेदों को रफू करवाया।

बीरबल ने सभी थैलियों को बड़ी बारीकी से देखा। एक थैली पर उनकी निगाह अटक गई। इसे बारीकी से देखने पर भी छेद का पता नहीं चल रहा था। बीरबल ने कहा, ''इस थैली का रफू किस रफूगर ने किया है।'' एक रफूगर चलकर बीरबल के पास आया और बोला, ''हुजूर, क्या बात है, मैंने रफू किया है।''

बीरबल उस रफूगर को लेकर एकांत में गए और डराते-धमकाते हुए उससे पूछा, ''बताओ, काजी की थैली रफू किसने की थी? तुमने की थी न?''

रफूगर डर गया और उसने कबूल कर लिया कि काजी की थैली उसने ही रफू की थी।

बीरबल ने उससे पूछा, ''सच-सच बोलना। तुमने यह थैली कब रफू की थी।'' बीरबल ने तल्ख स्वर में पूछा तो रफूगर कांपते स्वर में बोला, ''हुजूर, कोई दो साल हुए होंगे, एक काजी ने मुझसे यह थैली रफू करवाई थी।'' ''क्या तुम्हें पता है उस थैली में क्या रखा हुआ था?'' बीरबल ने रफूगर को घूरते हुए पूछा तो रफूगर सच को छिपा न सका और उसके मुंह से निकल गया, ''हुजूर उस में कुछ तांबे के पैसे और रांगे के टुकड़े थे।''

''काजी ने इस काम के लिए क्या तुम्हें कुछ दिया था?'' बीरबल की कड़क आवाज के आगे रफूगर बिल्कुल ही ढीला पड़ गया। वह थमती आवाज में बोला, ''दो मोहरें मिली थीं, मालिक।'' ''क्या वे मुहरें तुम्हारे पास अभी भी हैं। देखो, सच का साथ दोगे तो मैं तुम पर कोई आंच नहीं आने दूंगा।'' बीरबल के यह कहते ही रफूगर बड़ी मुश्किल से बोला, ''हुजूर, झूठ नहीं बोलूंगा। एक मुहर तो खर्च हो गई है। हां, एक मुहर मेरे पास है।''

''वह मोहर मुझे चाहिए। ज्यादा होशियारी दिखाने की कोशिश की तो शाही कहर से तुम्हें मैं भी नहीं बचा सकता।'' बीरबल के इतना कहते ही रफूगर भागा-भागा मोहर लाने चला गया।

बीरबल ने फातिमा बीबी और काजी को भी बुलवा लिया। रफूगर थोड़ी देर के बाद मोहर लेकर बीरबल के पास आया तो काजी उसको देखते ही डर गया। बीरबल ने रफूगर से मोहर लेकर फातिमा बीबी के हाथ में रख दी और कहा, ''तुमने अपनी मोहरों पर निशानी लगाई थी न। दिखाओ वह निशानी कहां है।''

फातिमा बीबी ने पलक झपकते ही अपना लगाया निशान बीरबल को दिखा दिया। अब बीरबल ने रफूगर की ओर थैली करके कहा, ''बोलो रफूगर, यह वही थैली है न?''

''हां हुजूर, यह वही थैली है।'' रफूगर रुक-रुककर बोला।

''हां तो....'' बीरबल तल्ख आवाज में बोले, ''तुमने कहां पर रफू किया था, बोलो?'' रफूगर थैली पर हाथ धरते हुए बोला, ''यहां पर हुजूर। मेरा काम साफ नजर आता है।'' काजी के तो पसीने छूटने लगे। उसके पास ऐसा कोई जवाब ही नहीं था कि वह अपने बचाव में कुछ कह सके।

बीरबल गरजकर बोले, ''इस काजी को जंजीरों में बांधकर जेल में डाल दिया जाए।'' इसके बाद काजी के घर की तलाशी ली गई और फातिमा बीबी की मोहरें उसके घर से बरामद हुईं। फातिमा बीबी ने अपना निशान सभी मोहरों पर दिखा दिया। बीरबल ने उन सारी मुहरों को उसे दे दिया। रफूगर को ईनाम देकर जाने दिया गया। बादशाह सलामत बीरबल के फैसले से बहुत खुश हुए।

घर कैसे लुटा

शहंशाह अकबर एक रोज दरबार में आए तो वह सबको बहुत ही गमगीन मुद्रा में दिखे। दरबारियों ने उनसे इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा, ''अब यह बेचैनी और उदासी तो बीरबल ही दूर कर सकते हैं।'' इसी बीच बीरबल दरबार में आ गए। जहांपनाह ने बीरबल को गौर से देखा और कहा, ''बीरबल, शायद तुम मेरी समस्या सुलझा सको। इस प्रश्न में पूरे राज्य की समस्या छुपी हुई है। बताओ, घर कैसे लुटा और बैल कैसे घायल हुआ?'' बीरबल के लिए कोई भी सवाल कठिन नहीं होता था। वह शीश नवाकर बड़े अदब से बोले, ''जहांपनाह, जुआ नहीं हटा था।''

''तुम कहना क्या चाहते हो, बीरबल, साफ-साफ बताओ।'' अकबर ने कहा।

''जहांपनाह, जुआ खेलना नहीं रोका गया तो घर लुट गया और बैल की गरदन से जुआ नहीं हटाया गया तो बैल घायल हो गया।'' बीरबल ने स्पष्ट शब्दों में जवाब दिया। शहंशाह अकबर बहुत ही खुश हुए और उसी समय उन्होंने घोषणा कर दी कि हमारे राज्य में कोई भी जुआ नहीं खेलेगा, जो जुआ खेलते पकड़ा जाएगा उसे दंडित किया जाएगा। इससे पूरे राज्य में अमन चैन स्थापित करने में बादशाह को काफी सहायता मिली। ●

चालाक बनिया

शहंशाह अकबर फुर्सत में थे। बीरबल पास में ही बैठे हुए थे। शहंशाह के दिमाग में अचानक ही एक सवाल आ गया, ''बीरबल, सुना है कि बनिया बहुत समझदार होता है।'' शहंशाह के यह कहते ही बीरबल बोले, ''हां हुजूर, चतुराई में उनका कोई जवाब नहीं।''

''तो क्या तुम यह साबित कर सकते हो?'' शहंशाह यह कहते-कहते चुप हो गए। भला बीरबल बादशाह के हुक्म को कैसे नकार देते? बीरबल कुछ बनियों से मिले और कुछ चतुर बनियों को चुनकर बादशाह के सामने ले आए और बादशाह से कहा, ''जहांपनाह, आप जिनकी बुद्धिमानी देखना चाहते हैं, वे सब दरबार में हाजिर हैं।''

बनिए कुछ समझ नहीं पा रहे थे। वे डरे-सहमे एक तरफ खड़े थे कि आखिर मामला क्या है? इसी बीच बादशाह ने मुट्ठी खोली और उड़द की साबुत दाल दिखाते हुए बोले, ''हमारी हथेली पर यह क्या है?''

बनिए तो देखते ही जान गए कि शहंशाह की हथेली पर उड़द की दाल है। उनसे इतनी सहज बात पूछी जा रही है, अवश्य कोई खास बात है, यह सोचकर उन बनियों में से किसी ने मूंग की दाल, किसी ने अरहर की दाल और किसी ने मसूर की दाल बताई। शहंशाह क्रोधित हो गए और गरजती आवाज में बोले, ''बेवकूफों, यह उड़द की दाल है। बस इसी जानकारी पर बुद्धिमान बनते हो? बोलो, यह उड़द की दाल है या नहीं?''

बनियों ने समवेत स्वर में कहा, ''जी हां.... जी हां, जहांपनाह, वही है।''

बनियों का समूह जी हजूरी करता हुआ बोला, ''हां, जहांपनाह, आपने जो कहा, वही है।'' बादशाह गुस्से से तमतमा गए और बीरबल की ओर आग्नेय निगाहों से देखने लगे। हाजिरजवाब बीरबल बोले, ''जहांपनाह, देखा आपने, बनियों की यही तो बुद्धिमानी है। इन्होंने पूरा प्रयास किया और हर प्रकार से आपकी 'हां-में-हां' मिलाई, ताकि आपके सवाल में कोई रहस्य हो तो उसके कहर से बच जाएं।''

बीरबल के इस तर्क ने शहंशाह का दिल जीत लिया और वह मान गए कि बनिए वास्तव में ही बड़े चतुर होते हैं। इसके बाद शहंशाह ने बनियों को बाइज्जत दरबार से विदा किया। ●

शातिर दिमाग मुंशी

शहंशाह अकबर ने एक मुंशी को चुंगी अधिकारी बना दिया। वह मुंशी बहुत ही प्रसन्न हुआ और बादशाह की ढेरों प्रशंसा करके चला गया। कुछ दूरी पर ही बीरबल बैठे थे। मुंशी के जाने के बाद वह बोले, ''हुजूर, वह मुंशी बहुत ही चालाक, धूर्त और बेईमान जान पड़ता है। देखना, वह बेईमानी करने से बाज नहीं आएगा।'' बादशाह ने बीरबल की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

बीरबल का शक सच साबित हुआ। बादशाह के पास मुंशी की शिकायतें आने लगीं कि मुंशी रिश्वत लेता है और प्रजा को बहुत ही तंग करता है। बिना रिश्वत लिए किसी से भी बात नहीं करता है।

बादशाह सलामत ने मुंशी का तबादला वहां कर दिया जहां बेईमानी करने की कोई गुंजाइश ही नहीं थी। वह मुंशी अधिकारी से घुड़साल का मुंशी मुकर्रर कर दिया गया। अब मुंशी का काम घोड़ी की लीद तोलना था, लेकिन जहां चाह होती है वहां राह निकल ही आती है। मुंशी ने वहां भी अपनी आदत न छोड़ी और रिश्वत लेने शुरू कर दी। मुंशी साइसों से बोला, ''तुम सब घोड़ों को दाना कम खिलाते हो, इसीलिए मुझे लीद तोलने को भेजा गया है, यदि तुम्हारी लीद तोल में कम बैठी तो मैं शहंशाह से शिकायत कर दूंगा।'' साइस यह सुनकर डर गए और मुंशी को प्रति घोड़ा एक रुपया देने लगे।

बादशाह के पास मुंशी की शिकायत पहुंची तो उन्होंने यमुना नदी की लहरें गिनने का काम उसे सौंप दिया। यहां पर बेईमानी का कोई काम नहीं था। मुंशी बेईमानों का बेईमान था। यहां भी उसने कमाई का रास्ता ढूंढ़ निकाला। अब मुंशी ने नावों को रोकना शुरू कर दिया और कहने लगा, ''रुको, मैं अभी लहरें गिन रहा हूं।''

बेचारे नाविक जब नावों को रोक- रोककर परेशान हो गए तब उन्होंने मुंशी को प्रतिमाह 10 रुपए देने प्रारंभ कर दिया।

दरबार में जब यह खबर पहुंची कि मुंशी नाविकों से पैसे वसूलता है तो शहंशाह ने हुक्म जारी किया कि नावों को न रोका जाए और उन्हें जहां जाएं जाने दिया जाए।

शातिर दिमाग मुंशी कहां किसी बंदिश और नियम को मानने वाला था। यहां भी उसने अपनी बुद्धि का इस्तेमाल कर एक तख्ती को तट पर यह लिखकर लगा दिया– 'रोको, मत जाने दो।' यह द्विअर्थी वाक्य शहंशाह के हुक्म का भी पालन कर रहा था और मुंशी को भी रिश्वत दिलवा रहा था।

बादशाह के पास फिर भी मुंशी की शिकायतें पहुंचने लगीं तो उन्होंने उस मुंशी की हरकतों से तंग आकर उसे नौकरी से हमेशा के लिए हटा दिया और बीरबल से कहा, ''बीरबल, हमने तुम्हारी बात नहीं मानी। तुम्हारा कहना सही था कि यह मुंशी जरूरत से ज्यादा होशियार और बेईमान लगता है।''

यह सब कहकर शहंशाह ने बीरबल के जिम्मे कर्मचारियों को जांचने-परखने का काम लगा दिया।

अपना वायदा भूल गया होगा

बीरबल से एक बार शहंशाह अकबर इतना प्रसन्न हुए कि उन्होंने बीरबल को इनाम में जागीर देने का निर्णय कर लिया। बीरबल के बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों से खुश होकर शहंशाह अकबर ने जागीर देने की बात तो कह दी लेकिन बाद में उनका इरादा बदल गया। बीरबल ने दो-तीन बार शहंशाह को उनका फैसला याद भी दिलाया लेकिन बादशाह बीरबल को अब जागीर देना नहीं चाहते थे।

एक रोज बीरबल ने कहा, ''हुजूर, मेरी जागीर का क्या हुआ?''

बादशाह बीरबल की बात अनसुनी कर दूसरों की बातों में लग गए।

बीरबल को बहुत बुरा लगा और वह अब मौके की तलाश में रहने लगे। एक दिन मौका आ ही गया। बादशाह बीरबल के साथ सैर पर निकले। रास्ते में उन्होंने ऊंट देखा तो बीरबल से सवाल कर दिया, ''बीरबल, ऊंट की गर्दन टेढ़ी क्यों है?''

बीरबल ने जवाब में कहा, ''जहांपनाह, यह भी किसी को पिछले जन्म में जागीर देने का वायदा करके भूल गया होगा।'' बीरबल के इतना कहते ही शहंशाह शर्मसार हो गए और उसी समय उन्होंने बीरबल को जागीर देने की घोषणा कर दी।

पूनम और दूज का चांद

एक बार बीरबल अपने किसी काम से काबुल गए। उनकी वेशभूषा देखकर लोगों ने वहां के बादशाह को शिकायत कर दी। काबुल के बादशाह के सैनिक बीरबल को दरबार में लेकर आए। काबुल के बादशाह ने उनसे पूछा, ''आप कौन हैं और यहां किस मकसद से आए हैं?'' बीरबल बोले, ''मैं एक मुसाफिर हूं और देश विदेश की यात्रा करता रहता हूं।'' काबुल के बादशाह ने कहा, ''तब तो तुम्हें देश-विदेश के अनेक राजाओं के बारे में पता होगा । बताओ, तुमने कहीं हमारे जैसा बादशाह देखा है?''

बीरबल सिर झुकाकर बोले, ''हुजूर, आप तो पूनम के चांद हैं। आप जैसा अन्य बादशाह भला कौन हो सकता है।''

काबुल का बादशाह मन-ही-मन खुश होता हुआ बोला, ''हम पूनम के चांद हैं तो तुम्हारा बादशाह क्या है?''' बीरबल सीना तानकर बोले, ''हुजूर, हमारा शहंशाह तो दूज का चांद है।''

काबुल का बादशाह स्वयं को पूनम का चांद समझकर खुशी के मारे गद्‌गद हो गया और बीरबल को छोड़ दिया और सादर अपने दरबार में बैठाया। दूसरे दिन बीरबल को वस्त्राभूषणों से नवाज कर विदा किया।

बीरबल वहां से दिल्ली पहुंचे तो उन्होंने अपने मित्रों को यह बात सुनाई। यह बात एक मुंह से दूसरे मुंह होते हुए शाही दरबार तक भी पहुंच गई। बीरबल से जो दरबारी ईर्ष्या करते थे उन्होंने इस बात को नमक-मिर्च लगाकर बादशाह अकबर के सामने पेश कर दिया। अकबर बादशाह को यह बात बड़ी ही बुरी लगी। अगले दिन बीरबल दरबार में पधारे तो शहंशाह ने बीरबल से कहा, ''बीरबल, हम क्या सुन रहे हैं। तुम काबुल गये थे। बताओ, तुमने वहां के सुलतान से क्या कहा है?'' बीरबल ने बादशाह सलामत को वहां की सारी बातें कह सुनाईं। अकबर बादशाह नाराज होते हुए बोले, ''बीरबल, काबुल के बादशाह को पूनम के चांद की तरह बड़ा और हमें दूज के चांद की तरह छोटा बताकर तुमने हमारी बेइज्जती नहीं की है?''

बीरबल सहज भाव से ही बोले, ''बादशाह सलामत, आप यह क्या कह रहे हैं। मैंने तो वहां आपका गुणगान ही किया है। पूनम का चांद कितना ही बड़ा क्यों न हो उसे कोई भी महत्व नहीं देता और वह तो अगले दिन से घटने लगता है। पल-पल घटने वाली चीज तो हर धर्म में अशुभ, तुच्छ और त्याज्य मानी जाती है। दूज का चांद चाहे कितना भी छोटा हो लेकिन हिन्दू और मुसलमान दोनों ही बड़े आदर भाव के साथ उसका दर्शन करते हैं। मुस्लिम महीना दूज से ही शुरू होता है, हिंदू लोग दूज के चांद को शुभ मानकर उसी दिन शुभ कार्य की शुरुआत करते हैं। इन सबसे बड़ी बात यह है कि दूज का चांद दिन प्रतिदिन बढ़ता ही है। जहांपनाह, अब आप ही बोलिए कि काबुल के बादशाह को पूनम का चांद और आपको दूज का चांद कहकर मैंने किसकी प्रशंसा की है?''

बीरबल को बादशाह ने उठकर गले से लगा लिया और कहा, ''मुझे पता है, बीरबल तुम जहां भी जाओगे, वहां मेरी प्रशंसा ही करोगे।'

बीरबल से जलने वाले दरबारियों का मुंह इतना-सा हो गया और जो दरबारी बीरबल की पसंद करते थे, वे तालियां पीटकर उनकी तारीफें करने लगे।

बीरबल की यही तो विशेषता थी कि वह बहुत ही सोच-समझकर बातें करते थे और मौका आने पर अपनी बात को सिद्ध करके दिखा भी देते थे।

कुछ भी नहीं बचा

अपने सवालों के लिए प्रसिद्ध बादशाह अकबर दरबार आए तो बीरबल कहीं नजर नहीं आए। उन्होंने दरबारियों से पूछा, ''बताओ, 27 में से 9 गए तो क्या शेष रहा?''

दरबारी मन-ही-मन सोचने लगे कि बादशाह यह क्या पूछ रहे हैं। क्या हम लोग कोई बच्चे हैं कि इतना आसान सवाल हल नहीं कर सकेंगे?'' सभी दरबारियों ने एक ही जवाब दिया, ''हुजूर 27 में से 9 निकल जाने पर 18 बचे। यह तो सबको ही मालूम है।''

बादशाह मुस्कराए, फिर बीरबल के आने का इंतजार करने लगे। इतने में बीरबल दरबार में आ खड़े हुए। शहंशाह ने उनसे भी यही सवाल कर दिया।

बीरबल जवाब में बोले, ''हुजूर, कुछ भी नहीं बचा।'' बीरबल का यह जवाब सुनकर सब आश्चर्य में पड़ गए। उनके जवाब से कोई भी संतुष्ट नहीं दिखा तो बीरबल आगे बोले, ''इसमें हैरान होने की कोई बात नहीं है। 27 नक्षत्र सालभर में होते हैं। इनमें से नौ नक्षत्र जो हैं, वे वर्षा ऋतु में होते हैं। यदि इन नक्षत्रों को निकाल दिया जाए तो जो बचे उनसे तो इस संसार का कोई भला नहीं होने वाला, इसीलिए मैंने कहा कि 27 में से 9 के चले जाने पर कुछ भी नहीं बचा।'

शहंशाह अकबर बीरबल का जवाब सुनकर अत्यंत ही प्रसन्न हुए और इसके लिए उन्हें इनाम भी दिया। ●

सच्चाई के मसीहा बीरबल

बादशाह अकबर दरबार में आकर अभी बैठे ही थे कि तभी दरबार में एक हत्या का मामला आ गया। बादशाह को बड़ा ही बुरा लगा कि आज की शुरुआत हत्या के मामले से ही हो रही है। बादशाह ने हुक्म दिया, ''यह हत्या का मामला है। इसमें जल्दबाजी करना ठीक नहीं होगा। इस मामले की सुनवाई अगले दिन होगी।''

अपराधी को मौका मिल गया। वह दूसरे दिन दरबार लगने से पहले ही बीरबल के घर पर पहुंच गया और दरबार के लिए तैयार हो रहे बीरबल के आगे गिड़गिड़ाने लगा, ''हुजूर, आप बुद्धिमानों के बुद्धिमान हैं। मैं बड़ी आशा लेकर आपकी शरण में आया हूं। मेरी फांसी की सजा उम्र कैद में तब्दील हो जाएगी तो मेरे परिजन आपका यह उपकार जीवन भर नहीं भूलेंगे।''

बीरबल यह सब सुनकर अवाक् रह गए।

अपराधी आगे बोला, ''हुजूर, मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी तरफ से आप ही बहस करें।'' बीरबल ने जवाब में कुछ नहीं कहा।

मामला दरबार में पेश हुआ। बादशाह अकबर ने अपराधी को उम्र कैद की सजा सुनाई। अपराधी आश्चर्यचकित भी हुआ और खुश भी हुआ। वह धीरे-धीरे चलकर बीरबल के नजदीक आया और बोला, ''हुजूर, लाख-लाख शुक्रिया, आपने मेरी फांसी की सजा उम्र कैद में करवा दी, मैं आपका ताउम्र ऋणी रहूंगा।''

यह सुनकर बीरबल बोले, ''हां, मुझे इस मामले में बड़ी दिक्कत उठानी पड़ी। जहांपनाह तो तुम्हें निर्दोष समझकर छोड़ने जा रहे थे। मेरे बार-बार समझाने पर उन्होंने तुम्हें उम्र कैद की सजा दी। क्योंकि केवल मुझे पता है कि तुमने अपराध किया है और तुमने मेरे घर पर अपना अपराध कबूल भी किया है।'' हकीकत यही थी। अपराधी यह सुनकर हत्प्रभ रह गया। वह माथा पीटकर रह गया कि बीरबल के सामने उसने अपना अपराध आखिर कबूल क्यों किया? ●

किसकी पत्नी

एक सौदागर अपनी सुंदर पत्नी के साथ अपने एक रिश्तेदार से मिलने जा रहा था। वे अभी कुछ ही दूर गए थे कि रास्ते में उन्हें एक किसान मिल गया। किसान अपनी बैलगाड़ी पर था। सौदागर की सुंदर पत्नी को देखते ही किसान का ईमान डोल गया। वह सौदागर से बोला, "लालाजी, आपको किस गांव में जाना है?"

सौदागर ने गांव का नाम जैसे ही बताया किसान झट से बोल पड़ा, "मैं भी तो वहीं जा रहा हूं। आप ऐसा करें अपनी पत्नी को मेरी गाड़ी में बैठा दीजिए।" सौदागर ने बिना सोचे-समझे ही अपनी पत्नी को गाड़ी में बैठा दिया और खुद पैदल ही चलने लगा।

कुछ दूर जाने के बाद किसान ने बैलों को पीटना शुरू कर दिया। बैल तेज-तेज चलने लगे। सौदागर भी गाड़ी के पीछे-पीछे दौड़ने लगा। किसान तो उसकी पत्नी पर लट्टू था। उसने उसे तरह-तरह के सब्जबाग दिखाने शुरू कर दिए और उसे अपने पक्ष में कर लिया। जब गांव आ गया तब सौदागर ने किसान को आवाज देकर कहा, "भइया, गाड़ी रोको। हमें जिस गांव में जाना है, वह गांव आ गया। मेरी पत्नी को यहीं पर गाड़ी से उतार दो।"

किसान बोला, "मेरा गांव तो अभी आगे है और यह तुम्हारी पत्नी नहीं है। यह तो मेरी पत्नी है।"

सौदागर किसान की बातें सुनकर अवाक् रह गया और दौड़कर गाड़ी के पास आ गया, फिर वह चिल्लाने लगा, "यह धूर्त किसान मेरी पत्नी को अपनी पत्नी बता रहा है और उसे गाड़ी से उतरने नहीं दे रहा है।"

सौदागर की बातें सुनकर कुछ लोग वहां आकर खड़े हो गए। लेकिन कोई भी कुछ नहीं बोल सका। दोनों आपस में बहस करते हुए शहंशाह अकबर के दरबार में पहुंचे। अकबर बादशाह ने उन दोनों की बातें सुनने के बाद बीरबल को हुक्म दिया कि वह इस मामले को सुलझाएं।

बीरबल ने वादी-प्रतिवादी दोनों को गौर से देखा, फिर गाड़ी में बैठी उस औरत को अपने पास बुलाया और उससे पूछा, "आखिर मामला क्या है, सच-सच बताओ?"

वह औरत कुछ नहीं बोली। बीरबल कुछ देर तक खामोश रहे, फिर उस महिला को स्याही की दवात दी और कहा, "इसमें पानी भर कर ले आओ।"

औरत कुछ समझ न सकी। दवात में पानी भरकर झट से आ गई। बीरबल ने दवात से स्याही निकाली और कुछ शब्द लिखकर देखे। स्याही में पानी की मात्रा सही थी। बीरबल ने सौदागर से कहा, "तुम अपनी पत्नी को ले जा सकते हो। यह तुम्हारी ही पत्नी है। किसान को झूठ बोलने और दूसरे की पत्नी को हड़पने की कोशिश करने के अपराध में सजा मिलेगी।"

शहंशाह आश्चर्य करते हुए बोले, "बीरबल, तुमने यह कैसे जान लिया कि यह औरत सौदागर की ही पत्नी है?"

बीरबल बोले, "जहांपनाह, मैंने उस महिला से दवात में पानी भरने को कहा। वह महिला दवात में उतना ही पानी भर कर लाई, जितना पानी स्याही के लिए उपयुक्त था, इससे मैंने अनुमान लगा लिया कि यह किसान की नहीं, सौदागर की पत्नी है क्योंकि सौदागर हिसाब लिखते समय कभी-कभी उससे स्याही में पानी अवश्य ही डलवाता होगा।" बीरबल के इस तर्कपूर्ण विचार को सुनकर अकबर बादशाह बहुत ही खुश हुए। ●

कौन जीतेगा

शहंशाह अकबर युद्ध के लिए तैयार हो रहे थे। सैनिक हाथों में शस्त्र-अस्त्र लिए उनके आस-पास खड़े थे। बीरबल भी उनके साथ थे। अकबर बादशाह सेना के साथ जब महल से कुछ दूर आए तो उन्होंने चतुर बीरबल से सवाल कर दिया, "बीरबल, तुम मेरे सच्चे दोस्त हो। बताओ, इस युद्ध में जीत किसकी होगी?" बीरबल असमंजस में पड़ गए। बहुत सोच-विचारकर बोले, "जहांपनाह, अभी मैं कुछ नहीं कह सकता।"

बादशाह चुपचाप रणक्षेत्र की ओर बढ़ गए। जब वह युद्ध के मैदान में पहुंचे तो उन्होंने बीरबल की ओर देखा और इशारे ही इशारे में वही सवाल बीरबल से किया।

बीरबल ने जवाब में कहा, "जहांपनाह, विजय तो आपको ही मिलेगी।"

शहंशाह ने पूछा, "यह तुम्हें कैसे पता, बीरबल? उस समय पूछा था तो तुमने ऐसा जवाब नहीं दिया था।" बादशाह के यह पूछने पर बीरबल बोले, "बादशाह सलामत, सामने देखिए, आपका दुश्मन हाथी पर सवार है। यह तो सबको ही मालूम है कि हाथी अपनी सूंड़ से धूल उठाकर अपनी पीठ पर फेंकता है और जब युद्ध का

तांडव चारों तरफ शुरू होता है तो अपनी सुध-बुध खो देता है। हुजूर, आप तो घोड़े पर सवार हैं। घोड़ा चालाक और बहादुर होने के साथ-साथ लड़ाकू भी होता है। मैंने यही सब देखकर अनुमान लगा लिया है कि विजय आपकी ही होगी।''

और सचमुच ही उस युद्ध में अकबर बादशाह की ही विजय हुई। युद्ध से लौटने के बाद बादशाह अकबर ने बीरबल को इनाम दिया। बीरबल केवल हाजिरजवाब ही नहीं बल्कि एक उम्दा किस्म के कूटनीतिज्ञ भी थे।

सबसे बड़ा बच्चा

शहंशाह अकबर और बीरबल महल के सामने वाले बगीचे में टहल रहे थे और आपस में बातचीत भी कर रहे थे। तभी बादशाह सलामत के मन में एक विचार आया और उन्होंने बीरबल की ओर देखते हुए कहा, ''बीरबल, क्या तुम्हें मालूम है, इस दुनिया में सबसे बड़ा कौन है?''

बीरबल धर्म संकट में पड़ गए। उन्हें इस बात का भी बोध था कि बादशाह सलामत उनके मुख से कहलवाना चाहते हैं कि सबसे बड़े वही हैं।

बीरबल बोले, ''जहांपनाह, सबसे बड़ा एक अबोध बच्चा होता है।''

बादशाह बीरबल के जवाब से संतुष्ट नहीं हुए। वह बीरबल से बोले, ''बीरबल, हम तुम्हारे जवाब से संतुष्ट नहीं हुए। तुम्हें अपनी बात सिद्ध करनी होगी।'' बीरबल ने कहा, ''जहांपनाह, मुझे अपनी बात साबित करने के लिए कुछ दिन का समय चाहिए।''

बादशाह अकबर ने बीरबल को समय दे दिया।

बीरबल अपनी बात साबित करने के लिए डेढ़ वर्षीय एक बच्चे को लेकर बादशाह के सामने आए। वह बच्चा बहुत ही सुंदर और गोल-मटोल था।

बादशाह की नजर उस बच्चे पर जैसे ही पड़ी वह सिंहासन से उठ खड़े हुए और बच्चे को गोद में ले लिया और लाड़-प्यार करने लगे।

इसी बीच हाथ-पांव मारते-मारते बच्चे ने बादशाह सलामत की दाढ़ी मुट्ठी में बांधकर खींच ली, जिससे बादशाह अचानक ही झुंझला पड़े, ''बीरबल, यह बच्चा तो बड़ा ही शैतान है। बच्चे को यहां लाने की क्या जरूरत थी?''

बीरबल अच्छा अवसर देखकर बोले, ''जहांपनाह, आप दुनिया के लोगों से कितने भी बड़े क्यों न हों, पर इस समय तो यह बच्चा ही आपसे बड़ा है। अगर यह सच न होता तो यह बच्चा आपकी दाढ़ी खींचने का साहस ही नहीं कर पाता। हुजूर, ऐसा दुस्साहस तो एक बच्चा ही कर सकता है, क्योंकि एक बच्चा ही तो है, जो निर्भय होता है। वह आग, पानी, मौत किसी से भी नहीं डरता है।'' बीरबल के इस तर्क के आगे शहंशाह अकबर को यह मानना ही पड़ा कि दुनिया में सबसे बड़ा बच्चा ही होता है।

तीसरी नजर का कमाल

शहंशाह अकबर बीरबल की बुद्धि की परीक्षा अक्सर ही लेते रहते थे। एक रोज बादशाह अकबर ने अपनी बहुमूल्य अंगूठी अंगुली से निकाली और एक विश्वसनीय दरबारी को देते हुए कहा, ''यह राज की बात है। किसी को बताना नहीं है और सबसे छिपाकर रखना है।''

दरबारी ने सिर झुकाकर बादशाह के हुक्म को सिर माथे पर धर लिया। दरबार में बीरबल आए तो बादशाह बोले, ''बीरबल, क्या तुम्हें पता है, हमारी अंगूठी आज सुबह से ही नहीं मिल रही है। पता नहीं कब अंगुली से निकलकर गिर गई?'' बीरबल यह सुनकर अवाक् रह गए।

शहंशाह ने आगे कहा, ''लगता है उसे किसी बाहरी आदमी ने लिया है। तुम तो ज्योतिष विद्या के जानकार

हो। यह काम में तुम्हारे जिम्मे लगाता हूं। अंगूठी का पता जल्द से जल्द लगाओ।''

बीरबल ने इधर-उधर गौर से देखा, फिर शहंशाह की आंखों में देखा, इसके बाद दरबारियों के चेहरों की तरफ देखा। बीरबल को पता था कि बादशाह सलामत की वह अंगूठी बहुत ही मूल्यवान है और वह उसे बहुत ही सम्भाल कर रखा करते हैं। वह कहीं गुम नहीं हो सकती या चोरी नहीं हो सकती।

बीरबल ने बहुत सोचने-विचारने के बाद कहा, ''हुजूर, मेरी तीसरी दृष्टि साफ बताती है कि जिसके पास अंगूठी है, उसकी दाढ़ी में तिनका है।'' बीरबल के इतना बोलने पर दरबारी एक दूसरे को देखने लगे। बीरबल की निगाह सबके चेहरे पर घूम रही थी।

इतने में बीरबल ने देखा कि बादशाह के सिंहासन के पास बैठा एक दरबारी घबराकर अपना मुंह और दाढ़ी टटोल रहा है। बादशाह ने उस दरबारी को ही अंगूठी दी थी। बीरबल से उस दरबारी की हरकत छिपी नहीं रह सकी। बीरबल ने तुरंत ही उस दरबारी की ओर इशारा करते हुए कहा, ''देखिए जहांपनाह, आपकी अंगूठी को चुराने वाला चोर आपके सिंहासन के पास ही बैठा है।''

शहंशाह अब क्या बोलते? वह बीरबल की चतुराई से बहुत ही प्रसन्न हुए और कहा, ''बीरबल, वास्तव में ही तुम्हारे पास तीसरी नजर है।'' दरबारी भी बीरबल की इस बुद्धिमता से आश्चर्यचकित थे। ●

बादशाह हंसे तो हंसे सोएं तो सोएं

बादशाह अकबर से कुछ खास लोग मिलने के लिए दरबार में आ गए। लेकिन बादशाह सलामत दरबार में अभी तक नहीं आए थे। मेहमान कुछ ज्यादा ही खास थे। बीरबल ने बादशाह की ओर से मेहमानों की खूब आवभगत की और उन्हें सम्मान के साथ उचित आसन पर बैठाया।

इतने में एक आदमी दरबार में आया और दरबारियों से कहा, ''आज बादशाह सलामत की माता जी का इंतकाल हो गया है।'' यह कहकर वह आदमी वापस चला गया। दरबारी यह सुनते ही काफी चिंतित हो गए कि आज खास मेहमान बादशाह सलामत से मिलने आए हैं और आज ही उनकी माताजी का निधन हो गया।

इतने में एक दूसरा व्यक्ति दरबार में आया और उसने सबसे कहा, ''बधाई हो, आज बादशाह सलामत के घर लड़का हुआ है।'' एक ही समय पर गम और खुशी की खबर सुनकर दरबारी अजीब-सी दुविधा की स्थिति में आ गए। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आज का दिन खुशियां मनाने का है या शोक मनाने का? उन्हें अब रोना चाहिए या हंसना चाहिए?

दरबारी जब किसी निर्णय पर नहीं पहुंच सके तब वे सब बीरबल के पास गए और बोले, ''बीरबल, तुम ही बताओ, हमें हंसना चाहिए या रोना चाहिए?'' बीरबल बोले, ''आप सब वही करें जो बादशाह सलामत करें। दरबार में बादशाह के आने का इंतजार करें। यदि जहांपनाह रोते हुए दरबार में आएं तो आप सब भी रोएं और हंसते हुए आएं तो आप सब भी हंसें।'' बीरबल के सुझाव को सब दरबारियों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया और सबने ही बीरबल की इस चतुराई की तारीफ की।

पढ़ा लिखा गधा

बीरबल की बुद्धिमत्ता एंव हाजिर जवाबी दूर-दूर तक मशहूर थी। एक दिन वह बादशाह अकबर के साथ दरबार में बैठे थे। तभी कर चोरों से जब्त की गई चीजों के साथ एक गधा भी दरबार में लाया गया।

बादशाह अकबर को खुश करने के इरादे से बीरबल गधे की तारीफ के पुल बांधते हुए बोले, ''जहांपनाह! इसके चेहरे से बुद्धिमानी फूट रही है। यदि इसे सिखाया जाए तो यह शायद पढ़ना-लिखना भी सीख जाए।''

बादशाह अकबर ने उनकी बात पकड़ ली और आदेश दिया कि गधा बीरबल को सौंप दिया जाए।

फिर बादशाह अकबर ने बीरबल से कहा, ''यदि गधा इतना बुद्धिमान है तो इसे ले जाओ और महीने भर में पढ़ा-लिखाकर वापस ले आओ।''

बीरबल को यह समझते देर नहीं लगी कि यदि वह इस काम में विफल हो गए तो क्या नतीजा होगा?

लेकिन बीरबल तो बीरबल ही थे। हार मानना तो उन्होंने सीखा ही नहीं था। ठीक एक महीने बाद उसी गधे की रस्सी थामे बीरबल दरबार में हाजिर हुए। बादशाह अकबर ने पूछा, ''क्या गधा पढ़-लिख गया है?''

बीरबल ने कहा, ''जी हां, जहांपनाह...!'' यह कहते हुए उन्होंने एक मोटी-सी किताब गधे के सामने रख दी।

गधा जुबान से किताब के पन्ने पलटता चला गया और तीसवें पन्ने पर पहुंचकर जोर-जोर से रेंकने लगा।

बादशाह अकबर और सभी दरबारी आश्चर्यचकित रह गए।

''तुमने यह चमत्कार कैसे किया?'' बादशाह अकबर ने पूछा।

बीरबल ने बड़ी शान के साथ समझाया, ''जहांपनाह! पहले दिन मैंने मुट्ठी भर घास किताब की जिल्द और पहले पन्ने के बीच रख दी। दूसरे दिन मैंने घास दूसरे पन्ने पर रख दी और किताब बंद कर दी। गधे ने उसे खोलकर घास खा ली। फिर रोजाना इसी तरह आगे के पन्ने पलटने लगा, लेकिन जब किताब में घास नहीं मिलती तो गधा गुस्से से रेंकने लगता था।''

बीरबल की तरकीब जानकर बादशाह और सभी दरबारी 'वाह-वाह' कर उठे।

संसार की सबसे बड़ी चीज

बादशाह अकबर बहुत विनोदी स्वभाव के थे। उन्हें पहेलियां बुझाने का बड़ा शौक था। उनके दरबार में एक से बढ़कर एक विद्वान और बुद्धिमान थे। लेकिन बादशाह अकबर की अधिकतर पहेलियों का उत्तर बीरबल ही दे पाते थे, इसलिए बादशाह अकबर उनसे बड़े प्रसन्न रहते थे।

एक दिन की बात है कि बीरबल दरबार में उपस्थित नहीं थे। बीरबल की अनुपस्थिति में दूसरे सभासद बीरबल के विषय में बादशाह अकबर के कान भर रहे थे। उनकी तरह-तरह से निंदा कर रहे थे। बादशाह अकबर को यह सब बुरा लगा। कारण– वे बीरबल को बहुत मानते थे, उन्हें दिल से प्यार करते थे। अतः बादशाह अकबर ने अपने सभासदों से कहा, ''तुम लोग व्यर्थ में बीरबल की बुराइयां कर रहे हो। वास्तव में बीरबल तुम लोगों से कहीं अधिक चतुर और बुद्धिमान हैं।''

बादशाह अकबर के ऐसा कहने पर वे लोग बोले, ''बादशाह सलामत! आप वास्तव में बीरबल को बहुत चाहते हैं, उन्हें हम लोगों से ज्यादा प्यार करते हैं। इस तरह आपने एक हिंदू को काफी सिर चढ़ा रखा है।''

उस दिन जब सभा समाप्त होने का समय आया तो बादशाह अकबर ने अपने उन चार सभासदों से कहा, ''देखो, आज बीरबल यहां नहीं हैं, मुझे अपने एक सवाल का जवाब चाहिए। तुम चारों मेरे प्रश्न का उत्तर दे दो। यदि तुम लोगों ने मेरे प्रश्न का सही उत्तर नहीं दिया तो तुम चारों को प्राणदंड दिया जाएगा।''

बादशाह अकबर की बात सुनकर चारों सभासद भयभीत हो गए। उनमें से एक ने हिम्मत करके कहा, ''प्रश्न पूछिए बादशाह सलामत!''

बादशााह अकबर ने पूछा, ''संसार में सबसे बड़ी चीज क्या है?''

बादशाह अकबर का प्रश्न सुनकर चारों चुप रह गए। उनकी समझ में प्रश्न का उत्तर नहीं आया। कुछ देर बाद उनमें से एक सभासद ने कहा, ''हुजूर! खुदा की खुदाई सबसे बड़ी चीज है।''

दूसरे सभासद ने कहा, ''बादशाह सलामत की सल्तनत सबसे बड़ी है।''

उस सभासद का उत्तर सुनकर बादशाह अकबर नें कहा, ''अच्छी तरह सोचकर उत्तर दो, वरना मैं कह चुका हूं कि तुम लोगों को प्राणदंड दिया जाएगा।''

तीसरे सभासद ने डरते-डरते कहा, ''बादशाह सलामत!

हमें कुछ दिनों का समय दिया जाए।''

बादशाह अकबर ने कहा, ''इसमें कोई एतराज नहीं है, मैं तुम लोगों को एक सप्ताह का समय देता हूं।''

चारों सभासद सभा से मुंह लटकाए बाहर निकले। उनके चेहरे लटके हुए थे, प्राणदंड के नाम पर चारों सभासद पीले पड़ गए। छः दिन बीत गए लेकिन उन्हें कोई उत्तर नहीं सूझ सका।

तब उन चारों ने आपस में सलाह की कि इस प्रश्न का उत्तर केवल बीरबल ही बता सकता है। यह निश्चय करके वे चारों बीरबल के पास पहुंच गए। उन्होंने बीरबल को पूरी घटना कह सुनाई और हाथ जोड़कर उनसे विनती कि वह उनके प्रश्न का उत्तर बता दें।

बीरबल ने उनका प्रश्न सुनकर कहा, ''मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे दूंगा, लेकिन मेरी एक शर्त है।''

''आप एक शर्त की बात करते हैं, हमें आपकी हजार शर्तें मंजूर हैं। बस हमें बचा लीजिए।'' चारों सभासद बोले।

तब बीरबल ने उनसे कहा, ''तुम चारों में से दो जने अपने कंधों पर मेरी चारपाई उठाकर महल तक ले चलोगे। एक मेरा हुक्का पकड़ेगा, जिसे मैं पीता हुआ चलूंगा। एक मेरी जूतियां लेकर चलेगा। बोलो मंजूर है?''

अगर किसी अन्य समय बीरबल उनको यह सब करने के लिए कहते तो शायद वे ऐसा कभी न करते। लेकिन अब जब उन्हें प्राणदंड दिए जाने का डर था तो वे तुरंत ही उनकी बात मानने को तैयार हो गए। उन्होंने वैसा ही किया। वे चारों अपने कंधों पर बीरबल की चारपाई उठाए, उनका हुक्का और जूतियां लिए हुए महल की ओर चल दिए।

बीरबल हुक्का पीते हुए चले जा रहे थे। रास्ते में लोग आश्चर्य से इस विचित्र दृश्य को देख रहे थे। चारों ने बीरबल की चारपाई को दरबार के मध्य में रख दिया। बीरबल ने चारपाई से उतरकर कहा, ''बादशाह सलामत! मुझे उम्मीद है कि आपको प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा। संसार में सबसे बड़ी चीज 'गर्ज' है।''

बादशाह अकबर मुस्करा उठे। दरअसल वे उन चारों को यह सबक सिखाना चाहते थे कि बीरबल की निंदा करना छोड़ दें। ●

आयुवर्धक वृक्ष

एक बार तुर्किस्तान के बादशाह को बादशाह अकबर की बुद्धि की परीक्षा लेने का विचार आया। उसने एक दूत को पत्र देकर सिपाहियों के साथ दिल्ली भेज दिया। पत्र का मजमून इस प्रकार था, ''बादशाह अकबर! मुझे सुनने में आया है कि आपके देश में कोई ऐसा वृक्ष है जिसके पत्ते खाने से मनुष्य की आयु बढ़ जाती है। यदि यह बात सच है तो मेरे लिए उस पेड़ के थोड़े से पत्ते अवश्य भिजवाएं।''

बादशाह अकबर उस पत्र को पढ़कर विचारमग्न हो गए। कुछ देर तक वह बीरबल से राय-मश्विरा करते रहे। फिर उन्होंने सिपाहियों सहित उस दूत को एक सुदृढ़ किले में कैद करवा दिया।

दूत और सिपाहियों को कैद हुए कई दिन बीत गए। एक दिन बादशाह अकबर बीरबल को साथ लेकर उन कैदियों को देखने गए।

बादशाह अकबर को देखकर कैदियों को अपने मुक्त होने की आशा बंधी, परंतु यह बात निर्मूल थी। बादशाह अकबर उनके पास पहुंचकर बोले, ''तुम्हारा बादशाह जिस वस्तु को चाहता है, वह मैं तब तक उसे नहीं दे सकूंगा जब तक कि इस सुदृढ़ किले की एक-दो ईंट न ढह जाए, उसी समय तुम लोग भी रिहा किए जाओगे। खाने-पीने की तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी। मैंने उसका प्रबंध करा दिया है।'' इतना कहकर बादशाह अकबर चले गए परंतु कैदियों की चिंता अधिक बढ़ गई। वे अपने मुक्त होने का उपाय सोचने लगे।

कुछ देर तक कैदी विचार-विमर्श में डूबे रहे। अंत में वे ईश्वर की वंदना करने लगे, ''या खुदा! क्या हम इस बंधन से मुक्त नहीं किए जाएंगे? क्या हमारा जन्म इस किले में बंद रहकर दुख भोगने के लिए हुआ है? आप तो बड़े रहमदिल हैं, हम बेगुनाहों पर भी कृपा कीजिए।'' इस प्रकार वे नित्य प्रार्थना

करने लगे।

ईश्वर की दयालुता प्रसिद्ध है। एक दिन बड़े जोरों का भूकंप आया और किले का कुछ भाग भूकंप के कारण धराशायी हो गया। सामने का पर्वत भी टूटकर चकनाचूर हो गया। इस घटना के पश्चात दूत ने बादशाह के पास किला टूटने की सूचना भेजी।

बादशाह अकबर को अपनी कही हुई बात याद आ गई। इसलिए वह दूत और उसके साथियों को दरबार में बुलाकर बोले, ''आपको अपने बादशाह का सवाल पता ही होगा और अब उसका उत्तर भी तुमने समझ लिया है। यदि नहीं समझा हो तो सुनो, मैं उसका खुलासा किए देता हूं। देखो, तुम लोग गिनती में केवल सौ हो और तुम्हारी आह से ऐसा सुदृढ़ किला ढह गया, फिर जहां हजारों लोगों पर अत्याचार हो रहा हो, वहां के बादशाह की उम्र कैसे बढ़ेगी? लोगों की आह से उसका शीघ्र ही पतन हो जाएगा। हमारे राज्य में अत्याचार नहीं होता। गरीब प्रजा पर अत्याचार न करना और भली भांति पोषण करना ही आयुवर्धक वृक्ष है। बाकी सारी बातें बेकार हैं।''

इस प्रकार समझा-बुझाकर बादशाह अकबर ने उस दूत और उसके साथियों सहित स्वदेश जाने की आज्ञा दे दी और उनका मार्ग व्यय भी दिया।

तुर्किस्तान पहुंचकर उन्होंने दिल्ली की सारी बातें अपने बादशाह को समझाईं। बादशाह अकबर की बातों से शिक्षा लेकर वह बादशाह और उसके दरबारी उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे।

सच है, लोगों की दुआओं से ही इंसान फलता-फूलता है, फिर चाहे वह बादशाह हो या फकीर। ●

दूध की जगह पानी

बादशाह अकबर को मुगल सम्राटों में सबसे अच्छा समझा जाता है। अकबर भी यह समझते थे कि उनकी प्रजा उन्हें बहुत चाहती है और वह बहुत कर्त्तव्यनिष्ठ हैं। एक दिन उन्होंने यही बात बीरबल के सामने रखी, ''बीरबल! हम यह जानना चाहते हैं कि हमारे राज्य में प्रजा कितनी ईमानदार है और हमें कितना प्यार करती है?''

बीरबल ने तुरंत उत्तर दिया, ''हुजूर! आपके राज्य में कोई भी पूरी तरह ईमानदार नहीं है। इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि प्रजा आपको कितना प्यार करती है।''

बादशााह अकबर बोले, ''यह तुम क्या कह रहे हो, बीरबल?''

''मैं अपनी बात को साबित कर सकता हूं, जहांपनाह!''

''ठीक है, तुम हमें साबित करके दिखाओ।''

तब बीरबल ने नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि बादशाह सलामत एक भोज करने जा रहे हैं। इसके लिए सारी प्रजा से अनुरोध है कि कल दिन निकलने से पहले हर आदमी एक-एक लोटा दूध पहुंचा दे। कड़ाहे रखवा दिए गए हैं। उनमें हर आदमी एक लौटा दूध डाल जाए।

ढिंढोरा सुनकर हर आदमी ने यही सोचा कि जहां इतना दूध इकट्ठा होगा, वहां उसके द्वारा एक लोटे पानी का क्या पता चलेगा? अत: हर आदमी कड़ाहों में पानी डालता गया। सुबह जब बादशाह अकबर ने उन कड़ाहों को देखा जिनमें प्रजा से दूध डालने को कहा गया था तो दंग रह गए। उन कड़ाहों में केवल पानी ही पानी था।

इस घटना के बाद बादशाह अकबर को यह मानना पड़ा कि बीरबल प्रजा की नब्ज को अच्छे से पहचानते हैं। ●

तीन चीजें

एक दिन बादशाह अकबर के दरबारियों ने उनसे शिकायत की, ''आलीजहां! आप सभी कार्य बीरबल को सौंप देते हैं, क्या हम कुछ भी नहीं कर सकते?''

बादशाह ने कहा, ''ठीक है, मैं अभी इसका फैसला कर देता हूं।''

तत्पश्चात उन्होनें एक दरबारी को बुलाकर कहा, ''मैं तुम्हें तीन रुपये देता हूं। इनकी तीन चीजें ले आओ। हर एक की कीमत एक रुपये होनी चाहिए। पहली चीज यहां की

होनी चाहिए। दूसरी चीज वहां की होनी चाहिए। तीसरी चीज न तो यहां की हो और न ही वहां की हो।''

दरबारी तुरंत बाजार गया। एक दुकानदार के पास जाकर उसने उससे ये तीनों चीजें मांगी। दुकानदार दरबारी की बातें सुनकर हंसने लगा और बोला, ''ये चीजें आपको कहीं भी नहीं मिल पाएंगी।''

उन तीनों चीजों को दरबारी ने अनेक दुकानों पर खोजा, लेकिन जब उसे वह तीनों चीजें कहीं भी नहीं मिलीं तो निराश होकर दरबार में लौट आया। उसने बादशाह अकबर से कहा, ''ये तीनों चीजें किसी भी कीमत पर, कहीं भी नहीं मिल सकतीं। अगर बीरबल ला सकें तो जानें।''

बादशाह अकबर ने बीरबल को बुलाया और कहा, ''जाओ, ये तीनों चीजें लेकर आओ।''

बीरबल ने कहा, ''कल तक ये चीजें आपकी खिदमत में हाजिर कर दूंगा।''

अगले दिन जैसे ही बीरबल दरबार में आए, वैसे ही बादशाह अकबर ने उनसे पूछा, ''क्यों, क्या हमारी तीनों चीजें ले आए?''

बीरबल ने कहा, ''जी हां, जहांपनाह! मैंने पहला रुपया एक फकीर को दे दिया जो वहां से भगवान के पास जा पहुंचा। दूसरा रुपया मैंने मिठाई में खर्च किया जो यहां काम आ गया और तीसरे रुपये का मैंने जुआ खेल लिया जो न तो यहां काम आएगा और न ही वहां अर्थात परलोक में काम आएगा।''

बीरबल की बात सुनकर सभी दरबारी आश्चर्यचकित रह गए। बादशाह अकबर ने बीरबल को बहुत सा इनाम दिया। ●

पगड़ी में पंख

बसंत ऋतु में एक दिन बादशाह अकबर ने बाग में दरबार लगाने की इच्छा व्यक्त की। तुरंत बाग में दरबार लगया गया जहां बादशाह सिंहासन पर बैठे थे। बादशाह अकबर के पास ही बीरबल बैठे हुए थे, जो बादशाह की सम्मति लेकर न्याय कर रहे थे। न्याय का काम पांच-छः घंटों तक होता रहा। उपस्थित लोगों का न्याय हो चुका था। उसके बाद एक व्यापारी आया। उसने अपनी अर्जी बादशाह अकबर के सामने रखी। बादशाह अकबर ने बीरबल से उसे पढ़कर सुनाने को कहा। आज्ञानुसार बीरबल ने उसे पढ़कर सुनाया।

बादशाह अकबर की प्रतिष्ठा की अनेक पंक्तियों के बाद उसमें लिखा था, ''मैं अजमेर शहर का रहने वाला हूं। देश-विदेश में घूम-फिरकर माल खरीदना-बेचना मेरा काम है। जिस समय मैं बंग देशांतर्गत ढाका नगर में पहुंचा, वहां मैंने एक सौदागर के पास एक राजहंस देखा, जो बहुत सुंदर और गुणवान था। उसके पंख सोने जैसे थे। मैं उसकी सुंदरता का वर्णन नहीं कर सकता। आपके महल में रहने योग्य जानकर मैंने उसको खरीदने का विचार किया। फिर उस सौदागर को मुंहमांगा दाम देकर उसको मोल ले लिया। उसे एक पिंजड़े में बंद करके यहां लाया तथा अपने कमरे में टांग दिया। वह पिंजड़ा हमेशा वहां टंगा रहता था। आज मैं जिस समय अपने घर वापस गया तो मुझको पिंजड़े में राजहंस नहीं मिला। मुझको शक है कि मेरे नौकरों ने उसे मार डाला है। मैं प्रार्थना करता हूं कि उसकी खोज कराकर अपराधियों को दंड दिया जाए।''

यह फरियाद सुनकर बादशाह अकबर ने उस व्यापारी के नौकरों को दरबार में बुलाने की आज्ञा दी। आज्ञानुसार उसके सब नौकर कुछ ही देर में दरबार में पहुंच गए। बादशाह अकबर ने उन नौकरों से अच्छी तरह पूछताछ की। परन्तु जब कुछ पता नहीं चला तो उन्होंने व्यापारी से कहा, ''तुम्हारी चोरी का पता नहीं चला। हमने तुम्हारे नौकरों से पूछताछ कर ली। अब यदि तुम्हें किसी दूसरे पर शक हो तो बताओ।''

यह सुनकर उस व्यापारी का मुंह उतर गया। उसने बीरबल से कहा, ''जैसा आज मेरे साथ न्याय हुआ, यदि ऐसे अन्य न्याय भी होते हों तो फिर सच्चा न्याय कौन करता है?''

बीरबल ने कहा, ''मैं तुम्हारा न्याय किए देता हूं।''

फिर बीरबल ने व्यापारी के नौकरों को दोबारा बुलाने की आज्ञा दी। सिपाही नौकरों को ले आए। कुछ खोज करने के बाद बीरबल उनकी ओर देखकर बोले, ''क्यों रे चोर! तेरे मन में क्या विचार है? पक्षी को मारकर खा गया और उसके पंख भी पगड़ी में छिपाकर दरबार में आया है। वाह! शाबाश। इतनी देर से तो तूने स्वीकार नहीं किया परन्तु अब

बोल, क्या कहता है?''

बीरबल को इस तरह कहते हुए सभी दरबारियों ने सुना। सौदागर के नौकरों में राजहंस को चुगने वाला भी था। उसने अपने मन में विचार किया कि कहीं मैं भूल से अपनी पगड़ी में पंख तो नहीं रख लाया हूं। ऐसा सोच कर उसने इस ढंग से धीरे-धीरे पगड़ी पर हाथ फेरना शुरू किया कि किसी भी दरबारी को मालूम न पड़े। सब लोग नौकरों की तरफ देख रहे थे, परन्तु किसी की भी दृष्टि उस चोर पर नहीं पड़ी। लेकिन बीरबल ने उस चोर को ताड़ लिया। उन्होंने उसके अलावा अन्य सबको छोड़ देने की आज्ञा दी। फिर बीरबल ने उससे अनेक प्रकार के प्रश्न किए, परन्तु जब किसी भी तरह उसने चोरी करना स्वीकार नहीं किया तो उसकी पिटाई करने की आज्ञा दी गई। पिटाई की बात सुनते ही उसने डर के मारे तुरंत अपना अपराध कबूल कर लिया।

बीरबल की इस बुद्धिमत्ता से न सिर्फ बादशाह अकबर ही बल्कि व्यापारी भी बहुत प्रसन्न हुआ। दरबारी भी बीरबल के न्याय पर वाह-वाह कर उठे। ●

मित्रता समाप्त

बादशाह अकबर के एक शहजादे की शहर के एक साहूकार के लड़के से मित्रता थी। शहजादा काम-धाम छोड़कर साहूकार के पुत्र के साथ रास क्रीड़ाओं में व्यस्त रहता था। बादशाह अकबर तथा साहूकार को यह मित्रता पसंद नहीं थी, इसलिए दोनों चाहते थे कि इनकी मित्रता टूट जाए। बादशाह अकबर ने कई बार शहजादे से कहा किंतु कोई नतीजा नहीं निकला। साहूकार भी यही चाहता था, क्योंकि उसका लड़का सारा कारोबार छोड़कर शहजादे के साथ घूमता रहता था। किंतु भयवश वह कुछ नहीं कह सकता था, क्योंकि यदि शहजादे को मालूम हो जाता तो अकारण ही जान जोखिम में पड़ सकती थी।

दोनों की मित्रता कैसे भंग हो, इस विषय पर एक दिन बादशाह अकबर विचार कर रहे थे, तभी बीरबल वहां पहुच गए। उन्हें देखकर बादशाह बहुत खुश हुए ओर अपने पास बैठाकर उनसे बोले, ''साहूकार के पुत्र तथा शहजादे की दोस्ती किसी न किसी उपाय से छुड़ानी चाहिए। मेरे विचार से तो तुम ही इस काम को कर सकते हो।''

बीरबल बोले, ''आलीजहां! एक हुक्म जारी कीजिए कि आज शहजादा तथा साहूकार का पुत्र दोनों साथ ही दरबार में उपस्थिति हों।''

बादशाह ने ऐसा ही हुक्म दिया और दोनों मित्र नियत समय पर दरबार में उपस्थित हुए। कुछ देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। जब बीरबल ने देखा कि अब शहजादे का मन यहां नहीं लग रहा है तो उन्होंने साहूकार पुत्र के पास जाकर उसके कान में फुसफसाकर कुछ कहा। बात स्पष्ट नहीं थी, अत: साहूकार का लड़का कुछ समझ नहीं सका। इसके पश्चात बीरबल ने शहजादे के मित्र को संबोधित करके चेतावनी दी, ''ध्यान रहे, यह बात बिल्कुल गुप्त रखी जाए। अपने इष्ट मित्र से भी तुम इसकी चर्चा मत करना।''

बीरबल की यह चेतावनी वहां उपस्थित सभी लोगों ने भी सुनी। इसके बाद दरबार दूसरे दिन के लिए उठ गया।

दरबार के बाद शहजादे ने अपने साहूकार मित्र से पूछा, ''बीरबल ने तुम्हारे कान में क्या कहा था?''

साहूकार मित्र शहजादे को कुछ नहीं बता सका। आखिर कोई बात बीरबल कहते या वह समझता, तभी तो उसे बताता।

इससे शहजादे के मन में कुछ शंका उत्पन्न हुई। वह बोला, ''मित्रवर! आज आपने यह नया तरीका खूब अपनाया है।''

साहूकार मित्र बोला, ''नहीं दोस्त! बिल्कुल नहीं। बीरबल ने तो मुझसे कुछ कहा ही नहीं, केवल कान के पास मुंह ले जाकर अस्पष्ट शब्दों में कुछ फुसफुसाकर हटा लिया। फिर खुले आम यह कहा कि जो बात मैंने तुमसे कही है, इस बात को गुप्त रखना।''

अब तो शहजादे को पूर्ण विश्वास हो गया कि साहूकार मित्र सब कुछ जानते हुए भी नहीं बता रहा है। शहजादे के दिल में भ्रम पैदा हो गया और धीरे-धीरे दोनों मित्रों के दिलों में एक-दूसरे के प्रति अविश्वास की भावना पनप गई। अंतत: दोनों की घनिष्ठ मित्रता भंग हो गई। फिर हमेशा के लिए दोनों मित्रों का मन एक-दूसरे से हट गया। वे अपने-अपने कामकाज देखने लगे। साहूकार को भी यह मित्रता भंग हो जाने से बड़ी खुशी हुई। बादशाह अकबर बीरबल की चतुराई से अत्यधिक प्रसन्न हुए। उन्होंने बीरबल के उस कार्य से खुश होकर उन्हें बहुत से पुरस्कार दिए। ●

अकबर-बीरबल की नोक-झोंक

अकबर और बीरबल के किस्से दुनिया भर में मशहूर हैं। बीरबल, शहंशाह अकबर के नौ रत्नों में से एक थे। वे बेहद हाजिर जवाब थे। वे इतने बुद्धिमान थे कि बड़ी-से-बड़ी समस्या को चुटकियों में हल कर दिया करते थे। वे बड़े-बड़े और पेचीदा मुकदमों का अपनी सूझबूझ से ऐसा फैसला करते थे कि दरबारी वाह-वाह कर उठते थे। बादशाह अकबर और बीरबल में अक्सर नोक-झोंक चलती रहती थी, जो बड़ी ही मजेदार, ज्ञानवर्धक और हास्यप्रद होती थी। ऐसी ही नोक-झोंक और किस्सों का संग्रह किया गया है इस बुकाजीन में। आप भी पढ़ें और मनोरंजन के साथ पाएं-ज्ञान का भंडार।
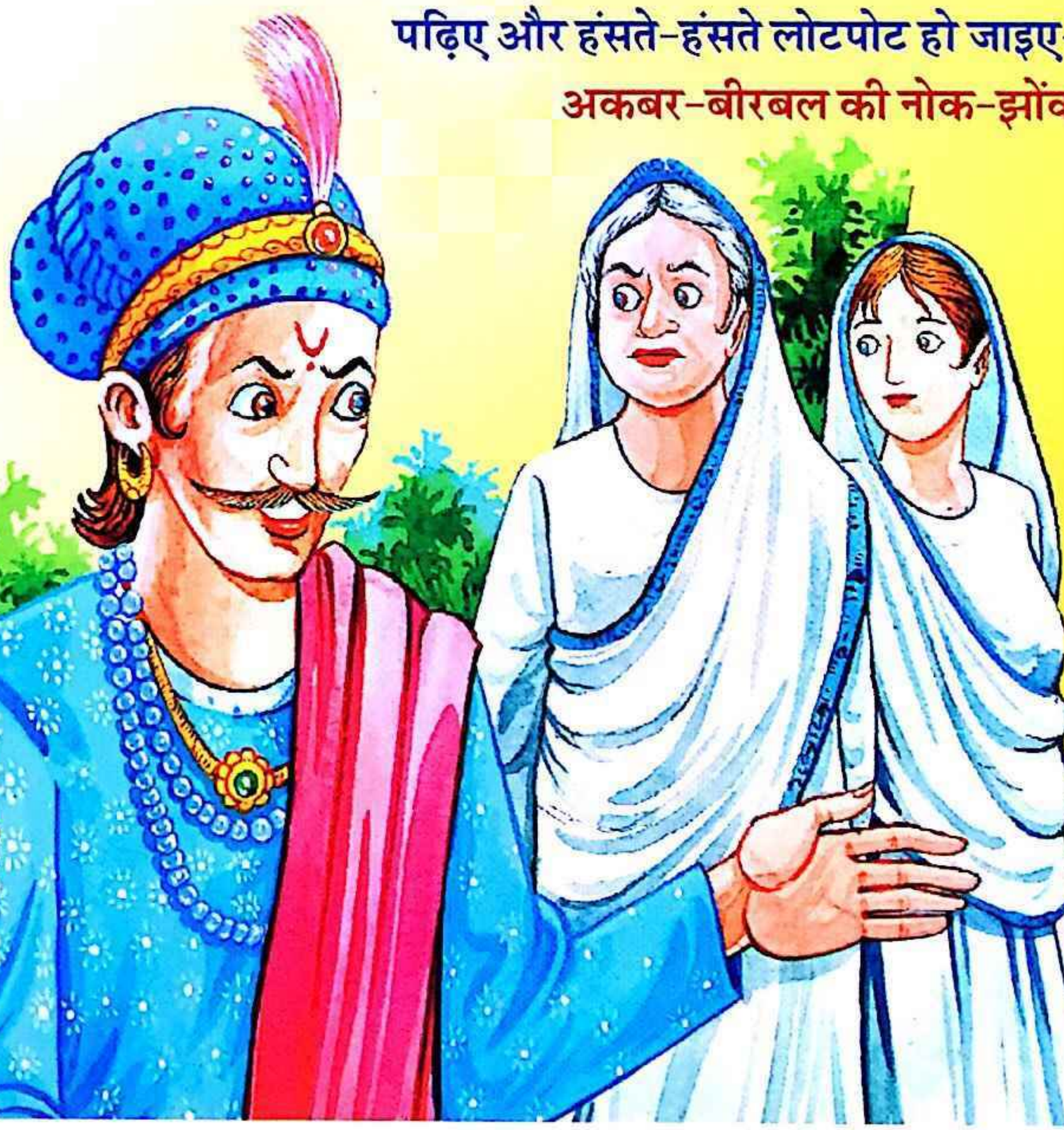
पढ़िए और हंसते-हंसते लोटपोट हो जाइए-
अकबर-बीरबल की नोक-झोंक